निवेदन

संतबानी पुस्तक-माला के छापने का अभिप्राय जक्त-प्रसिद्ध महात्माओं की बानी व उपदेश को जिन का लोप होता जाता है बचा लेने का है। अब तक जितनी बानियाँ हम ने छापी हैं उन में से विशेष तो पहिले छपी ही नहीं थीं और कोई २ जो छपी थीं तो ऐसे छिन्न भिन्न, बेजोड़ या अशुद्ध रूप में कि उन से पूरा लाभ नहीं उठ सकता था।

हम ने देश देशान्तर से बड़े परिश्रम और व्यय के साथ ऐसे हस्त-लिखित दुर्लभ ग्रंथ या फुटकर शब्द जहाँ तक मिल सके असल या नक़ल कराके मँगवाये हैं और यह कार्रवाई बराबर जारी है। भर सक तो पूरे ग्रंथ मँगा कर छापे जाते हैं और फुटकर शब्दों की हालत में सर्व साधारन के उपकारक पद चुन लिये जाते हैं। कोई पुस्तक बिना कई लिपियों का मुक़ाबला किये और ठीक रीति से शोधे नहीं छापी जाती, ऐसा नहीं होता कि औरों के छापे हुए ग्रंथों की भाँति बेसमझे और बेजाँचे छाप दी जाय। लिपि के शोधने में प्रायः उन्हीं ग्रंथकार महात्मा के पंथ के जानकार अनुयायी से सहायता ली जाती है और शब्दों के चुनने में यह भी ध्यान रक्खा जाता है कि वह सर्व साधारन की रुचि के अनुसार और ऐसे मनोहर और हृदय-बेधक हों जिन से आँख हटाने का जी न चाहे और अंतःकरन शुद्ध हो।

कई बरस से यह पुस्तक-माला छप रही है और जो जो कसरें जान पड़ती हैं वह आगे के लिये दूर की जाती हैं। कठिन और अनूठे शब्दों के अर्थ और संकेत नोट में दे दिये जाते हैं। जिन महात्मा की बानी है उन का जीवन-चरित्र भी साथ ही छापा जाता है और जिन भक्तों और महापुरुषों के नाम किसी बानी में आये हैं उन के संक्षेप वृत्तांत और कौतुक फुट-नोट में लिख दिये जाते हैं।

☞—THIS LIST CANCELS ALL PREVIOUS LISTS.

सूचना—कागज़ का दाम इधर और भी बढ़ जाने और छपाई तथा सिलाई बहुत बढ़ जाने से किताबों का दाम अब नीचे लिखे मुताबिक रखना ही पड़ा—

फ़िहरिस्त छपी हुई पुस्तकों की

जीवन-चरित्र हर महात्मा के उन की बानी के आदि में दिया है

पुस्तक	दाम
कबीर साहिब का साखी संग्रह	१=)
कबीर साहिब की शब्दावली, भाग पहला ॥), भाग दूसरा ...	॥)
,, ,, ,, भाग तीसरा ।≈), भाग चौथा ...	≡)
,, ,, ज्ञान-गुदड़ी, रेख़ते और झूलने	।=)
,, ,, अखरावती	=)
धनी धरमदास जी की शब्दावली और जीवन-चरित्र	॥-)
तुलसी साहिब (हाथरस वाले) की शब्दावली और जीवन-चरित्र भाग प०	१≈)
,, ,, भाग २, पद्मसागर ग्रंथ सहित	१≈)
,, ,, रत्न सागर मय जीवन-चरित्र ...	१।-)
,, ,, घट रामायन मय जीवन चरित्र, भाग १ ...	१॥)
,, ,, ,, ,, भाग २ ...	१॥)
गुरु नानक की प्राण-संगली सटिप्पण, और जीवन-चरित्र, भाग पहिला	१॥)
,, ,, ,, भाग दूसरा	१॥)
दादू दयाल की बानी, भाग १ "साखी" १॥) भाग २ "शब्द" ...	१)
सुंदर बिलास	१-)
पलटू साहिब भाग १—कुंडलियाँ	॥)
,, भाग २—रेख़ते, झूलने, अरिल, कवित्त, सवैया ...	॥)
,, भाग ३—भजन और साखियाँ	॥)
जगजीवन साहिब की बानी भाग पहला ॥-) भाग दूसरा	॥-)
दूलन दास जी की बानी	।)॥
चरनदासजी की बानी और जीवन-चरित्र, भाग प० ॥-), भाग दू० ...	॥)
ग़रीबदास जी की बानी और जीवन-चरित्र	१।-)
रैदास जी की बानी और जीवन-चरित्र	॥)
दरिया साहिब (बिहार वाले) का दरिया सागर और जीवन-चरित्र ...	।≡)॥
,, ,, के चुने हुए पद और साखी	।-)
दरिया साहिब (मारवाड़ वाले) की बानी और जीवन-चरित्र ...	।≡)
भीखा साहिब की शब्दावली और जीवन-चरित्र	।≈)॥

गुलाल साहिब (भीखा साहिब के गुरु) की बानी और जीवन-चरित्र ...	।।।=)
बाबा मलूकदास जी की बानी और जीवन चरित्र	।)।।
गुसाईं तुलसीदास जी की बारहमासी	-)
यारी साहिब की रत्नावली और जीवन-चरित्र	=)
बुल्ला साहिब का शब्दसार और जीवन-चरित्र	।)
केशवदास जी की अमीघूँट और जीवन-चरित्र	-)।।
धरनीदासजी की बानी और जीवन-चरित्र	।=)
मीरा बाई की शब्दावली और जीवन-चरित्र	।।)
सहजो बाई का सहज-प्रकाश और जीवन-चरित्र	।=)।।
दया बाई की बानी और जीवन-चरित्र	।)
संतबानी संग्रह, भाग १ [साखी]	१।।)
[प्रत्येक महात्मा के संक्षिप्त जीवन-चरित्र सहित]	
,, ,, भाग २ [शब्द]	१।।)
[ऐसे महात्माओं के संक्षिप्त जीवन-चरित्र सहित जो भाग १ में नहीं दी हैं]	
	कुल ३३।-)

दूसरी पुस्तकें

लोक परलोक हितकारी सपरिशिष्ट [जिसमें ऐतिहासिक सूची व १०२ स्वदेशी और विदेशी संतों, महात्माओं और विद्वानों और ग्रंथों के अनुमान ६५० चुने हुए वचन १६२ पृष्ठों में छपे हैं]	तसवीर सहित सजिल्द	१)
	बेजिल्द	।।।=)
(परिशिष्ट लोक परलोक हितकारी)		=)
अहिल्याबाई का जीवन चरित्र अँग्रेज़ी पद्य में		≡)

नागरी सीरीज़

सिद्धि	।।)
उत्तर ध्रुव की भयानक यात्रा	।।)
"गायत्री सावित्री" स्त्रिओं के लिए अत्यन्त उपयोगी और शिक्षाप्रद पुस्तक	।।)

दाम में डाक महसूल व रजिस्टरी शामिल नहीं है वह इसके ऊपर लिया जायगा।

[सन् १९२१] मनेजर, बेलवेडियर प्रेस, इलाहाबाद।

धरनीदासजी का जीवन-चरित्र

बाबा धरनीदासजी जाति के श्रीवास्तव्य कायस्थ एक बड़े महात्मा थे। इनका जन्म ज़िला छपरा (सूबा बिहार) के माँझी नामी गाँव में संवत १७१३ विक्रमी में हुआ पर चोला छोड़ने का समय ठीक मालूम नहीं होता। माँझी का गाँव सरजू नदी के तट पर उत्तर की ओर बसा है जहाँ अब एक बड़ा पुल रेल का बन रहा है।

धरनीदास जी के पिता का नाम परसरामदास था और घर में खेती का काम होता था। धरनीदास जी आप माँझी के बाबू के दीवान थे और उनके मालिक उनकी बड़ी क़दर करते थे और पूरा भरोसा रखते थे पर उनकी अंतर गति से बेख़बर थे।

कहते हैं कि एक दिन धरनीदास जी ज़मींदारी के काम में लगे हुए थे कि अचानक पानी भरा हुआ लोटा जो पास रक्खा हुआ था उन्हों ने काग़ज़ और बस्ते पर ढलका दिया जिस पर पूछा गया कि ऐसा क्यों किया। धरनीदासजी ने कुछ जवाब न दिया; आख़िर को बाबू की अप्रसन्नता और उन्हें पागल समझ लेने पर उन्हों ने कहा कि जगन्नाथजी के बस्त्र में आरती करते समय आग लग गई थी जिसे मैं ने पानी डाल कर बुझाया है। इस कथन का विश्वास बाबू और उनके अधिकारियों

को न हुआ और इनकी हँसी उड़ाई जिस पर धरनीदासजी वस्ता छोड़ कर यह कहते हुए चल दिये—"लिखनी नाँहि करौं रे भाई। मोंहि राम नाम सुधि आई"। राजा ने दो भरोसे के आदमी जगन्नाथपुरी को भेज कर तहक़ीक़ात की तो मालूम हुआ कि सचमुच जिस समय कि बाबा धरनीदास ने लोटे का पानी गिराया वहाँ आग लगी थी जिसे उनकी सूरत का एक आदमी प्रगट हो कर बुझा गया। इस हाल को सुन कर बाबू बड़े लज्जित हुए और आप बाबा धरनीदास को बुलाने और उनसे अपना अपराध छिमा कराने को गये पर उन्हों ने फिर नौकरी पर लौटने से इनकार किया और कहा कि अब हम को भगवत्भजन करने दो। बाबू ने बहुत कुछ नक़द और ज़मीन भी उनके गुज़ारे के लिये देना चाहा पर उन्हों ने नामंज़ूर किया।

यही कथा जगन्नाथ पुरी में आग बुझाने की कबीर साहब की बाबत भी प्रसिद्ध है और यह कहाँ तक एतबार के लायक़ है इसे हम पढ़नेवालों की राय पर छोड़ते हैं।

इसके बाद बाबा धरनीदास जी गृहस्थ आश्रम छोड़ कर साधू हो गये और उसी गाँव में एक झोपड़ी डाल कर रहने लगे। कहते हैं कि उन्हों ने गृहस्थ आश्रम में चन्द्रदास नाम के एक साधू से दीक्षा ली थी और भेष लेने पर एक दूसरे साधू सेवानंद को गुरू धारन किया। जो हो इसमें संदेह नहीं कि धरनीदास जी आप ऊँचे दरजे के शब्द-अभ्यासी और गहिरे भक्त थे जिनकी गति उनकी अत्यंत मधुर, प्रेम रस में पगी हुई, और अंतरी भेद की बानी से प्रगट होती है।

कितनी ही करामातें बाबा धरनीदास जी की महिमा की मशहूर हैं मसलन एक बार उनको कई अहीर जाति के चोर रात को मिले और उनसे अपनी राग में गीत गवाई फिर वहाँ से चल कर चोरी को गये और चोरी करने के पीछे आँखों पर ऐसी अँधेरी

छा गई कि रास्ता घर से निकलने का न सूझता था; जब उनको बहुत दुखी देखा तो धरनीदास जी ने अपने बड़े चेले सदानंद जी को दया करके भेजा जो उनको अपने गुरू की सेवा में लाये। उनके सन्मुख पहुंचते ही चोरौं की आँखें खुल गईं और वह महात्मा जी के चरनोँ पर गिर कर सच्चे साधू बन गये।

इसी तरह कहते हैं कि एक बार बहुत से भेष रामत करते हुए आये जिनके भोजन का प्रबंध किया गया पर जब खाने का समय आया तो उन लोगौं ने शरारत से कहा कि तुम जाति के कायस्थ हो और द्वारिकाधीश का छाप लगा कर अपनी शुद्धि नहीं की है इससे हम तुम्हारा धान्य ठाकुर जी को कैसे भोग लगा सकते हैं। धरनीदास जी ने हज़ार समझाया पर उन लोगौं ने एक न सुनी आख़िर को महात्मा जी बोले कि अच्छा थोड़ी सी मुहलत दो तो हम द्वारिका जाकर छाप ले आते हैं यह कह कर अपनी कुटिया में घुस गये और तुर्तही बाहर निकल कर द्वारिका जी की छाप अपनी बाँह पर दिखला दी जिसको देखकर वह लोग अचरज में आ गये और चरनौं पर गिरे।

ऐसे ही धरनीदास जी के शरीर त्याग करने की कथा प्रसिद्ध है कि जब समय आया तो अपने चेलौं से कहा कि अब हम बिदा होते हैं यह कह कर उस स्थान पर आये जहाँ गंगा और सरजू का संगम है और जल पर चादर बिछा कर उस पर आसन जमा कर बैठ गये। थोड़ी देर तक धारा के साथ बहते नज़र आये फिर उनके चेलौं को दीख पड़ा कि पानी में आग लगी जिसकी लवर आकाश तक उठी और धरनीदास जी गुप्त हो गये।

इन कथाओं पर टीका करना ऐसे भोले भक्तौं का जो उन पर सचौटी से बिश्वास करते हैं जी दुखाना होगा, तो भी इतना कहना अनुचित न होगा कि बाबा धरनीदास सरीखे महात्मा की

महिमा ऐसी सिद्धि शक्ति की कथाओं की मुहताज नहीं है और न सच्चे महात्मा कभी ऐसी करामात दिखलाते हैं।

बाबा धरनीदासजी की गद्दी पर उन के गुरुमुख चेले सदानंद जी बैठे। अब तक वह गद्दी क़ायम है और हिन्दुस्तान भर में हज़ारों अनुयायी उनके पंथ के फैले हुए हैं, यद्यपि शब्द-अभ्यास बिरले ही करते हैं। धरनीदासजी के लिखे हुए दो ग्रंथों का पता चलता है—एक 'सत्यप्रकाश' और दूसरा 'प्रेम प्रकाश'।

इस पुस्तक के पद और साखी इत्यादि कुछ तो हम को बाबू सरजूप्रसाद जी मुआफ़ीदार तेरही ज़िला बाँदा ने दिये जिन की सहायता संतबानी पुस्तक-माला के काम में कई बरस से चली आती है और कुछ बाबू धीरजदास जी सेक्रिटरी संतमत कुबैटी, जोतरामराय ज़िला पुरनिया के भेजे हुए वरक़ों से चुने गये हैं, जिन दोनों महाशयों को हम धन्यवाद देते हैं॥

इलाहाबाद,
जून सन १९११ ई०

दास,
एडिटर।

धरनीदास जी की बानी

फुटकर शब्द

(१)

एक पिया मोरे मन मान्यो पति ब्रत ठानौं हो ।
अवरो जो इन्द्र समान, तौ तृन करि जानौं हो ॥१॥
जहँ प्रभु बैसि सिँहासन, आसन डासब हो ।
तहवाँ बेनियाँ डोलइबौँ, बड़ सुख पइबौँ हो ॥२॥
जहँ प्रभु करहिँ लवासन*, पवढ़हिँ आसन हो ।
कर तेँ पग सुहरैबौँ, हृदय सुख पइबौँ हो ॥३॥
धरनी प्रभु चरनामृत, नितहिँ अचइबौँ हो ।
सन्मुख रहिबौँ मैँ ठाढ़ी अंते नहिँ जइबौँ हो ॥४॥

(२)

बहुत दिनन पिय बसल बिदेसा ।
आजु सुनल निज अवन सँदेसा ॥ १ ॥
चित चितसरिया† मैँ लिहलौँ लिखाई ।
हृदय कमल धइलोँ दियना लेसाई ॥ २ ॥

---

*भोजन । †चित्रशाला ।

प्रेम पलँग तहँ धइलौं बिछाई ।
नख सिख सहज सिँगार बनाई ॥ ३ ॥
मन हित अगुमन दिहल चलाई ।
नयन धइल दोउ दुअरा बैसाई* ॥ ४ ॥
धरनी धनि† पल पल अकुलाई ।
बिनु पिया जिवन अकारथ जाई ॥ ५ ॥

(३)

पिया मोर बसैं गउर गढ़‡, मैं बसौं प्राग‡ हो ।
सहजहिँ लागु सनेह, उपजु अनुराग हो ॥ १ ॥
असन बसन तन भूषन, भवन न भावै हो ।
पल पल समुझि सुरति, मन गहबरि§ आवै हो ॥२॥
पथिक न मिलहि सजन जन, जिनहिँ जनावौँ हो ।
बिहबल बिकल बिलखि चित, चहुँ दिसि धावौँ हो ॥३॥
होय अस मोहिँ ले जाय, कि ताहि ले आवै हो ।
तेकरि होइबौँ लउँड़िया, जे रहिया बतावै हो ॥४॥
तबहिँ त्रिया पत‖ जाय, दोसर जब चाहै हो ।
एक पुरुष समरथ, धन बहुत न चाहै हो ॥५॥
धरनी गति नहिँ आनि, करहु जस जानहु हो ।
मिलहु प्रगट पट¶ खोलि, भरम जनि मानहु हो ॥६॥

(४)

जहिया भइल गुरू उपदेस । अंग अंग कै मिटल कलेस ॥१॥
सुनत सजग** भयो जीव । जनु अगिनी परै घीव ॥२॥

---

*बिठलाय दिया । †सोहागिन स्त्री । ‡नाम नगर का (अर्थ सफेद शहर) । §पछताना, घबराना । ‖हुर्मत । ¶घूंघट । **जाग उठना ।

उर उपजल प्रभु प्रेम । छुटि गे तब ब्रत नेम ॥३॥
जब घर भइल अँजोर* । तब मन मानल मोर ॥४॥
देखे से कहल न जाय । कहले न जग पतियाय ॥५॥
धरनो धनि तिन भाग । जेहिँ उपजल अनुराग ॥६॥

(५)

जग मैँ कायथ जाति हमारी ।
पायो है माला तिलक दुसाला, परमारथ ओहदा री ॥१॥
कागद जहँ लगि करम कमायो, कैँची ज्ञान रसा† री ।
गुरु के चरन अनंद जाप करि, अनुभव वरक‡ उतारी ॥२॥
मन मसिहानी§ साँच की सयाही, सुरति सोफ़‖ भरि डारी ।
भरम काटि करि कलम छुरी छबि, तकि तृसना खत¶ मारी ॥३॥
तबलक** तत्त दया को दफ़्दर, संत कचहरी भारी ।
रैयत जगत सब्द कै कौँड़ी, दूजी मार न मारी†† ॥४॥
नाम रतन को भरो खजाना, धरो सो हृदय कोठारी ।
है कोइ परखनहार बिबेकी, बारम्बार पुकारी ॥५॥
धरनी साल ब साल अमाली‡‡, जमाखरच यहि पारी ।
प्रभु अपने कर§§ कागज मेरो, लीजै समुझि सुधारी ॥६॥

(६)

मन तुम यहि बिधि करो कैथाई ।
सुख संपति कबहूँ नहिँ छीजै, दिन दिन बढ़त बड़ाई ॥१॥

---

*उँजेरा । †तीव्र । ‡पन्ना । §दावात । ‖खुज्जा । ¶क़त जोकि क़लम में चीरा जाता है । **मुट्ठा काग़ज़ोँ का । ††क़ायदा है कि कचहरी (अदालत) में जो क़ुसूरवार समझा जाता है उस को सज़ा या मार दी जाती है परंतु संतोँ की कचहरी मैँ जगत की रैयत (जीवोँ) को शब्द रूपी कोँड़ी (कोड़ा) की मार के सिवाय दूसरी मार नहीँ दी जाती । ‡‡जाँच करने वाला अमला । §§हाथ ।

कसबा[*] काया करु ओहदा री, चित्त-बिठा[†] धरु साधी।
मोहासिब[‡] करि अस्थिर मनुवाँ, मूल मंत्र अवराधी ॥२॥
तत्त को तेरिज[§] बेरिज[||] बुधि की, ध्यान निरखि ठहराई।
हृदय हिसाब समुझि कै कीजै, मासहिं हक्क[¶] लगाई ॥३॥
राम को नाम रटो रोजनामा[**], मुक्ति सों फरद बनाई।
अजपा जाप अवरिजा[††] करि के, सर्व कर्म बिलगाई ॥४॥
रैयत पाँच पचीस बुझाए, हरि हाकिम रहे राजो।
धरनी जमाखरच बिधि मिलि है, को करि सकै गमाजी[‡‡] ५

(७)

पानी से पैदा कियो सुनु रे मन बौरे, ऐसा खसम खुदाय कहाई रे।
दाह[§§] भयो दस मास को सुनु रे मन बौरे, तर सिर ऊपर पाँई रे१
आँच लगी जब आग की सुनु रे मन बौरे, आजिज है अकुलाई रे।
कवल कियो मुख आपने सुनु रे मन बौरे, नाहक अंक लिखाई रे२
अब की करिहौं बंदगी सुनु रे मन बौरे, जो पइहौं मुकलाई[|||] रे।
जग आये जंगल परे सुनु रे मन बौरे, भरम रहे अरुझाई रे ३
पर की पीर न जानिया सुनु रे मन बौरे, नाहक छुरी चलाई रे।
बाँधि जँजीरे जाइ हौ सुनु रे मन बौरे, बहुरि ऐसहीं जाई रे ४

---

[*]गाँव। [†]बैठकी। [‡]हिसाब करनेवाला या न्याव करने वाला हाकिम। [§]खुलासा जमाबंदी या हिसाब का। [||]मीज़ान या जोड़ती का काग़ज़। [¶]मासिक। [**]रोज़नामचा। [††]हिसाब का चिट्ठा। [‡‡]ग़बन, चोरी। [§§]गर्भ की जलन। [|||]मुकलना=भेजना; गर्भ में जब बालक बहुत तकलीफ़ पाता है तो मालिक से प्रार्थना करता है कि अब की कष्ट से छुड़ा दो तो अब बंदगी भक्ति करूँगा।

सतगुरु कै उपदेस ले सुनु रे मन बौरे, दोजख दरद मिटाईरे।
मानुष देह दुरलभ है सुनु रे मन बौरे, धरनी कह समुझाई रे।५।

(८)

भाई रे जीभ कहल नहिँ जाई।
नाम रटन को करत निठुराई, कूदि चलै कुचराई* ॥१॥
चरन न चलै सुपंथ पै पग दुइ, अपथ चलै अतुराई† ।
देत बार कर दीन्ह दूबरो, लेत करै हथियाई‡ ॥२॥
नैना रूप सरूप सनेही, नाद स्रवन लुब्धाई§ ।
नासा चहतो बास बिषै की, इन्द्री नारि पराई ॥३॥
संत चरन को सीस नवै नहिँ, ऊपर अधिक तराई ।
जो मन घेरि बेन्हिये‖ बाँधो, भाजै छाँद¶ तुराई ॥४॥
का सोँ कहोँ कहे को मानै, अंग अंग अकुठाई** ।
धरनीदास आस तब पूजै, जो हरि होहिँ सहाई ॥५॥

(९)

मन बसि लेहु अगम अटारी ॥टेक॥
नव नारिन को द्वारा निरखो, सहज सुखमना नारी ॥१॥
अजब अवाज नगारा बाजत, गगन गरजि धुनि भारी ॥२॥
तहँ बरे बाती दिवस न राती, अलख पुरुस मठ धारी ॥३॥
धरनी कै मन कहा न मानै, तबहिँ हनो है कटारी ॥४॥

(१०)

मन रे तू हरि भजु अवरि कुमति तजु,
है रहु बिमल बिरागी अनुरागी लो ॥१॥

---

*बैल के अड़ने को कूचर कहते हैं। †जलदी। ‡देने की बेर अपने हाथ को कमज़ोर कर लेता याने खींचे रहता है और लेने की बेर हाथ फैला देता है। §ख़ाहिशमंद। ‖पकड़ना : ¶रस्सी। **अकुलाता है।

देई देवा सेवा झूठी, जैसे मरकट मूठी,
अंत बहुरि पिलगाने पछिताने लो ॥२॥
जठर अगिन जरै, भोजन भसम करै,
तहँ प्रभु पालल दैंही, नित तेही लो ॥३॥
सुत हितु बंधु नारी, इन सँग दिना चारी,
जल सँग परत पखाने*, असमाने लो ॥४॥
पर जन हाथी घोरा, इहव कहत मोरा,
चित्र लिखल पट† देखा, तस लेखा लो ॥५॥
धरनी भिच्छुक बानी, हम प्रभु अज्ञा मानी,
मिलहु पट‡ खोली, अनमोली लो ॥६॥

(११)

मन तुम कस न करहु रजपूती ॥१॥
गगन नगारा बाजु गहागह, काहे रहो तुम सूती ॥२॥
पाँच पचीस तीन दल ठाढ़े, इन सँग सेन§ बहूती ॥३॥
अब तोहि घेरी मारन चाहत, जस पिँजरा महँ तूती ॥४॥
पइहो राज समाज अमर पद, ह्वै रहु बिमल बिभूती ॥५॥
धरनीदास बिचार कहतु है, दूसर नाहिँ सपूती ॥६॥

आरती व भोग

(१)

भक्त बछल‖ जब भोग लगावै। पंचामृत षट रस रुचि भावै ॥१
आदि कुमारी चउका सारै। चरन पखारि कै बेद बिचारै ॥२
ब्रह्मा बिस्नु महेसुर देवा। कर जोरे ठाढ़े करि सेवा ॥३॥

---

*ओला। †पटरी। ‡किवाड़। §फ़ौज। ‖भक्त वत्सल।

आरति सेत अनंत बिराजै। सहजहिँ सब्द अनाहद गाजै ॥४॥
धरनी प्रभु देवन को देवा। मानि लेत सब जन की सेवा ॥५॥

(२)

मन बच क्रम मोरे राम कि सेवा। सकल लोक देवन को देवा १
बिनु जल जल भरि भरि नहवावौं। बिना धूप के धूप धुपावौं २
बिन घंटा घरी घंट बँजावौं। बिनहिं चँवर सिर चँवर ढुरावौं३
बिन आरति तहँ आरति वारौं। धरनी तहँ तन मन धन वारौं ४

॥ चितावनी गर्भ लीला ॥

॥ रेखता ॥

जै जै उचारो, "धरनी" ध्यान धारो।
तजो मन बिकारो, भजो प्रान प्यारो ॥१॥
जबै गर्भ बासा, कियो मनहिँ खासा।
बनो माथ हाथा, चरन पीठ साथा ॥२॥
लगो पेट ग्रीवा*, अहुट हाथ सीवा।
रकत मास हड्डी, तुचा रोम चड्ढी ॥३॥
कियो दसव द्वारा, पवन प्रान धारा।
तहाँ प्रान प्यारा, दियो आय चारा ॥४॥
बँधे अष्ट गाता, अधो मुख झुलाता।
भयो कष्ट भारी, तो कहता पुकारी ॥५॥
नरक तें निकारो, हौं बंदा तिहारो।
करौं भक्ति ऐसी, कहौं आज जैसी ॥६॥

---

*गर्दन।

चरन चित्त लावोँ, न काहू दुखावौँ ।
दया करि दयाला, उहाँ तेँ निकाला ॥७॥
कछुक दिन अचेते, गये दूध लेते ।
बहुरि अन्न पानी, बचा बोल जानी ॥८॥
कही काहु माता, पिता बहिन भाई ।
लगो काहु चाचा चचानी सगाई ॥९॥
ममेरा फुफेरा खलेरा[*] घनेरा ।
अरोसी परोसी चिन्हो चेर चेरा ॥१०॥
कुला कर्म जानो यगानो बिगानो ।
उहाँ गुष्ट[†] कीन्हो सो भरमो भुलानो ॥११॥
गई बालवस्था भयो देँह कामा ।
बहू ब्याह लाये बजाये दमामा ॥१२॥
घोड़े बटोरे बराती बनाये ।
बड़े डिंभ[‡] करि कै बहू ब्याह लाये ॥१३॥
त[§] दुनिया के परिपंच देखै जु आये ।
अपहिँ आपने पाँव बेरी बँधाये ॥१४॥
खनी खंदकै कोट कीन्हो कँगूरा ।
महल के टहल मेँ घनेरे मजूरा ॥१५॥
माया को पसारा कियो फौज भारी ।
बड़ी साहबी चाँप कीन्हो सवारी ॥१६॥
कबहुँ जाय पच्छिन सोँ पंछी धरावै ।
कबहुँ जंगली जीव कुत्तन तुरावै ॥१७॥

---

[*]मवसियाउत नाता । [†]जो गर्भ में प्रतिज्ञा की थी । [‡]धूमधाम, खटराग । [§]तौ ।

कबहुँ जाल जंजाल मच्छी बझावै ।
कबहुँ बन घेरावै अगिन से जरावै ॥१८॥
सो तोपैं गढ़ावै गढ़ी को ढहावै ।
कबहुँ बंद बेसी मवेसी ले आवै ॥१९॥
बड़े चाक चैाखूट ईंटा पकावै ।
जड़ै पाथरै नक़्सगीरी करावै ॥२०॥
घरा धौरहर धवल ऊँचो उठावै ।
तहाँ जोरि आछे बिछौना बिछावै ॥२१॥
तहाँ फूल फैलो लगे तूल तकिया ।
दरीची बरीची उठै झाँक झाँकिया ॥२२॥
सिपाही घनेरे खड़े सीस नावैं ।
किते भिक्षुको झूँठ सोभा सुनावैं ॥२३॥
हरिन माल* मेढ़ा व हस्ती लड़ावै ।
नई नागरी नारि† नाटिन नचावै ॥२४॥
घरी को बजावै समुझि जिय न आवै ।
हरै धन बिराना घसोरा‡ लगावै ॥२५॥
कतेको भले जीव सूली चढ़ावै ।
महा मस्त ह्वै मुंड-माला बँधावै ॥२६॥
जो हरि की भगति जीव-दाया दिढ़ावै ।
करै ता की निंदा नगीचा न आवै ॥२७॥
बिलोका पसारा सनहिँ मन बिचारा ।
जगत जेर मारा जिवन घर हमारा ॥२८॥

*पहलवान । †पतुरिया । ‡धाँधली ।

त करता कला देखि ऐसो विचारा ।
लगे दूत गैबी पलंगै पछारा ॥२९॥
किते वैद बैठे करैं औषधाई ।
कितेको करैं आप संसा ओझाई* ॥३०॥
किते जंत्र ताबीज लीखैं लिखावैं ।
कितेको सगुनिया झरावैं फुकावैं ॥३१॥
कहैं आज ऐसो मिलै जो जियावै ।
बराबर कया† भार सोना सो पावै ॥३२॥
जबहिं जुक्ति जगदीस ऐसी बनाई ।
तबहुं राम को नाम निहचै न आई ॥३३॥
तकावै तबेला झुमेला‡ के हाथी ।
परो बूझि यह दाँव संगी न साथी ॥३४॥
खजाना रुपइया सोनइया§ जहाँ हीं ।
रही सुंदरी जो जहाँ सो तहाँ हीं ॥३५॥
कमाई समुझि जीव आई रोआई ।
गये ऐसहीं जन्म भक्ती न आई ॥३६॥
चलावन‖ चहै जाहि जगदीस रइया ।
कहो ताहि को जग कवन है रखइया ॥३७॥
दैव को न जाना दिया सो बुझाना ।
जगीरी तगीरी व थाना निसाना ॥३८॥
पयानो पयानो¶ पुकारैं जु लोगा ।
त रोवै कबीला परो मुंड सोगा ॥३९॥

*ओझा जो जंत्र मंत्र करते हैं। †काया, देह। ‡झूमने वाला। §सोना। ‖बुलाना। ¶ निकालो निकालो।

जना चारि आये वहाँ तैं उठाये ।
अगिन मैं जराये नदी मैं बहाये ॥४०॥
पिन्हाये कफन खोदि खादे गड़ाये ।
जु दीवान साहब सलामत को आये ॥४१॥
प्रबोधो न पाँचो बहुत नाच नाचो ।
कला खेलि खाली चले इन्द्रजाली* ॥४२॥
जहाँ धर्मराया चितरगुप्त छाया ।
उहाँ पत्र देखा सुकृत की न रेखा ॥४३॥
नहीं नाम गाया नहीं जीव दाया ।
भगति की न भेवा नहीं साधु सेवा ॥४४॥
जुआ जन्म हारे वे गुरु के बिचारे ।
भुलाने अनारी परा बीचि भारी ॥४५॥
गये यहि प्रकारा कितेको भुवारा† ।
अवर जो बेचारा करे को सुमारा ॥४६॥
गये कौरवो और सिसुपाल रावन ।
गये छप्पनो कोटि जादव कहावन ॥४७॥
गये चक्कवे चक्रवर्ती कहाये ।
गये मंडली कोउ सँदेसो न पाये ॥४८॥
गये साकबंधी सका बाँधि केते ।
ते माटी मिले बीर बलवान जेते‡ ॥४९॥

---

*काम क्रोध आदिक पाँचो दूत को रोका नहीं बल्कि इन्हीं का नाच नाचते थे सो मरने पर ऐसाही हुआ जैसे कि इन्द्रजालवाला तमाशा कर के चल देता है। †भुवाल=राजा। ‡ऐसे राजा जिन का शाक चलता है और शूर बीर धूल में मिल गये।

गये खानखानाँ सुलताँ छत्रधारी ।
गये मीर उमरा करोरौं हजारी ॥५०॥
जो बेगम बेचारी गमे* मार डारी ।
हुती प्रान-प्यारी सो नारी पद्मारी ॥५१॥
गये रावना और रानी गुमानी ।
तिन्हौं की कहो धौं कहाँ है निसानी ॥५२॥
गये लखपती जो धजा बाँधि कोटी ।
दियो डारि पाँसा लई मारि गोटी ॥५३॥
हिये चेति चेतो चितौनी चिताऊँ ।
सँभारो सँभारो अगाऊँ अगाऊँ† ॥५४॥
भरे दाग पीछे जतन कर धुवइये ।
अगाऊँ नहीं दाग के बाट जइये ॥५५॥
कृपा तैँ भई मानुषा देह यारो ।
चलो राह नेकी बदी को बिसारो ॥५६॥
भगति भाव चूके सोई भवन फूँके ।
जिन्हौं भक्ति भैंटा जरा मरन मेटा ॥५७॥
सोई जन सुभागे उलटि पंथ लागे ।
हिये दाग दागे पिया प्रेम पागे ॥५८॥
भगति ध्रुव कमाया अचल राज पाया ।
भले आपु जागे अवर को जगाया ॥५९॥
त महलाद अहलाद§ बहु भक्ति धारी ।
तपै इन्द्र‖ कैसो सकै कौन टारी ॥६०॥

---

*शोक । †आगे ही से । §उमंग से । ‖उन को इंद्र कितनाही दुख दे पर भक्ति से नहीं टाल सकता ।

मोरधुज* तम्रधुज* जनक* अम्मरीषा* ।
जुधिष्ठिर* भरथ* गोपिचंदे* परीछा* ॥६१॥
बिभीषन को देखो कि जो भक्ति साजे ।
अजहुँ लोक निकलंक निरसंक गाजे ॥६२॥
भगति भरथरी की अवर जानि पीपा ।
जिन्हौं का अमर नाम है दीप दीपा ॥६३॥
कबीरा* गोरखनाथ* मीरा* बड़ाई ।
कामा* व नामा* सुदामा* भलाई ॥६४॥
सुकदेव* जयदेव* सोभा सुहाई ।
रैदास* सेना* धना* धीरताई ॥६५॥
अमर नाम अहमद* तजी पादसाही ।
दुनी† मैं प्रगट प्रेम जा को सराही ॥६६॥
फकीरी करै कोउ साँचे अकीदा ।
मिसाले रहीमा* बजीदा* फरीदा* ॥६७॥
नीके जानि के चत्रभुज* चित्त लाया ।
भजी लोक लज्जा तजी मोह माया ॥६८॥
बिराजे जहाँ लौं भगत लोक माहीं ।
कहाँ लौं कहौं संत को अंत नाहीं ॥६९॥
सकल संत दाया चितवनी चिताया ।
धरनिदास आया सरन राम राया ॥७०॥

---

*भक्तों के नाम । †दुनिया ।

॥ शब्द ॥

(राग सारंग)

॥ १ ॥

भइ कंत दरस बिनु बावरी।
मो तन ब्यापै पीर प्रीतम की, मूरुख जानै आवरी ॥१॥
पसरि गयो तरु प्रेम साखा सखि, बिसरि गयो चित चाव री।
भोजन भवन सिँगार न भावै, कुल करतूति अभाव री ॥२॥
खिन खिन उठि उठि पंथ निहारौं, बार बार पछितावँ री।
नैनन अंजन नींद न लागै, लागै दिवस बिभाव* री ॥३॥
दैँह दसा कछु कहत न आवै, जस जल ओछे नाव री।
धरनी धनी अजहुँ पिय पाऔं, तौ सहजै अनँद बधाव री ॥४॥

॥ २ ॥

हरि जन हरि के हाथ बिकाने।
भावै कहो जग धृग जीवन है, भावै कहो बौराने ॥१॥
जाति गँवाय अजाति कहाये, साधु सँगति ठहराने।
मेटो दुख दारिद्र परानो†, जूठन खाय अघाने ॥२॥
पाँच जने परबल परपंची, उलटि परे बंदिखाने।
छुटी मजूरी भये हजूरी, साहब के मन माने ॥३॥
निरममता निरबैर सभन तेँ, निरसंका निरबाने।
धरनी काम राम अपने तेँ, चरन कमल लपटाने ॥४॥

॥ ३ ॥

हरि जन वा मद के मतवारे।
जो मद बिना काठि बिनु भाठी, बिनु अग्निहिँ उदगारे ॥१॥

---

*बुरा। †भागा।

बास अकास घराघर भीतर, बुंद झरै झलका रे।
चमकत चंद अनंद बढ़ो जिव, सब्द सघन निरुवारे ॥२॥
बिनु कर घरे बिना मुख चाखे, बिनहिँ पियाले ढारे।
ताखन* स्यार सिंह को पौरुष, जुत्थ गजंद बिडारे ॥३॥
कोटि उपाय करै जो कोई, अमल न होत उतारे।
धरनी जो अलमस्त दिवाने, सोइ सिरताज हमारे ॥४॥

॥ ४ ॥

हित करि हरि नामहिँ लाग रे।
घरी घरी घरियाल पुकारै, का सोवै उठि जाग रे ॥१॥
चोआ चंदन चुपड़ तेलना, और अलबेली पाग रे।
सो तन जरे खड़े जग देखो, गूद निकारत काग रे ॥२॥
मात पिता परिवार सुता सुत, बंधु त्रिया रस त्याग रे।
साधु के संगति सुमिर सुचित होइ, जो सिर मोटे भाग रे॥३
सम्बत जरै बरै नहिँ जब लगि, तब लगि खेलहु फाग रे।
धरनीदास तासु बलिहारी, जहँ उपजै अनुराग रे ॥४॥

॥ ५ ॥

ऐसे राम भजन करु बावरे।
बेद साखि जन कहत पुकारे, जो तेरे चित चाव रे ॥१॥
काया द्वार है निरखु निरंतर, तहाँ ध्यान ठहराव रे।
तिरबेनी एक संगहिँ संगम, सुन्न सिखर कहँ धाव रे ॥२॥
हद्द उलंघि अनाहद निरखो, अरध उरध मधि ठाँव रे।
राम नाम निसु दिन लव लागै, तबहिँ परम पद पाव रे॥३
तहँ है गगन गुफा गढ़ गाढ़ो, जहाँ न पवन पछाँव रे।
धरनीदास तासु पद बंदै, जो यह जुगति लखाव रे ॥४॥

*तत्छन=चटपट।

॥ ६ ॥

मेरो राम भलो व्यौपार हो ।
वा सोँ दूजा दृष्टि न आवै, जाहि करो रोजगार हो ॥१॥
जो खेती तो उहै कियारी, बिनु बीज बैल हर फार हो ।
रात दिवस उद्दम करे, गंग जमुन के पार हो ॥२॥
बनिज करो तो उहै परोहन*, भरो बिबिधि परकार हो
लाभ अनेक मिले सतसंगति, सहजहिँ भरत भँडार हो ॥३
जो जाचौ† तो वाहि को जाचौ, फिरौ न दूजे द्वार हो ।
धरनी मन वच क्रम मन मानो, केवल अधर अधार हो ॥४॥

(राग गंधार)

॥ १ ॥

जुगजुग संतन की बलिहारी ।
जो प्रभु अलख अमूरत अविगत, तासु भजन निरधारी॥१॥
मन बच क्रम जगजीवन को ब्रत, जीवन को उपकारी ।
संतन साँच कही सबहिन तेँ, सुत पितु भूप भिखारी ॥२॥
ढोलिया ढोल नगर जो मारै, गृह गृह कहत पुकारी ।
गोधन जुत्थ पार करिबे को, पीटत पीठि पहारी‡ ॥३॥
एहि जग हरि भगता पतिबरता, अवर बसै बिभिचारी ।
धरनी धृग जीवन है तिन्ह को, जिन्ह हरि नाम बिसारी॥४॥

॥ २ ॥

जो जन भक्त बछल उपवासी§ ।
ता को भवन भयो उँजियारो, प्रगटी जोति दिवा सी ॥१॥

---

*गाड़ी । †माँगो । ‡गौओं के झुंड को इधर उधर विचर जाने से बचाने को पीठ पर लाठी मारते हैं । §सेवक ।

लोक लाज कुल कानि बिसारो, सार सब्द को गासी।
तिन्ह को सुजस दसो दिसि बाढ़ो, कवन सकै करि हाँसी॥२॥
हरि ब्रत सकल भक्त जन गहि गहि, जम तें रहे मवासी*।
देँह धरी परमारथ कारन, अंत अभैपुर बासी॥३॥
काम क्रोध तृसना मद मिथ्या, सहज भये बनबासी†।
संतत‡ दीन दयाल दयानिधि, धरनी जन सुखरासी॥४॥

(राग बेलावल)

॥ १ ॥

मोहिँ कछु नाहिँ बिसाय, कोउ कैसहु कहि जाव री॥टेक॥
झाँकि झरोखे रावला, मन मोहन रूप देखाव री।
दृष्टि परे परबस पर्‍यो घर, घरहु न मोहिँ सोहाय री॥१॥
जस जलचर जल मेँ चरै, मुख चारो सहज समाय री।
निगलत तो वहि निर्भय, अब उगलत उगलि न जाय री॥२॥
जस पंछी बन बैठियो, अपनो तन मन ठहराय री।
नर§ को भेद न भेदियो, पर अवचक लागे आय री॥३॥

॥ दोहा ॥

जाहि परो दुख आपनो, सो जानै पर पीर।
धरनी कहत सुन्यो नहीँ, बाँझ की छाती छीर॥

॥ २ ॥

तब कैसे करिहौ राम भजन।
अबहिँ करौ जब कछु करि जानौ, औचक
कौंच‖ मिलैगो तन॥१॥

---

*रक्षा में, बचे हुए। †निकसुआ, ख़ारिज। ‡निरंतर। §नरकुल जिसमें लासा लगा कर चिड़िया फँसाते हैं। ‖मही।

अंत समौ कस सीस उठैहौ, बोल न ऐहै दसन रसन* ।
थकित नाटिका[†] नैन स्रवन बल, बिकल सकल अँग नख
सिख सन[‡] ॥ २ ॥

ओझा वैद सगुनिया पंडित, डोलत आँगन द्वार भवन ।
मातु पिता परिवार बिलखि[§] मन, तोरि लिये तन
सब अभरन ॥३ ॥

बार बार गुनि गुनि पछतैहौ, परबस परिहै तन मन धन ।
धरनी कहत सुनो नर प्रानी, वेगि भजो हरि चरन सरन॥४॥

॥ ३ ॥

एक अलाह के मैं कुरबानी ।
दिल ओझल[‖] मेरा दिलजानी ॥१॥
तू मेरा साहब मैं तेरा बन्दा ।
तू मेरि सभी हवस पहिचन्दा ॥२॥
बार बार तुम कहँ सिर नावौं ।
जानि जरूर तुम्हैं गोहरावौं ॥३॥
तुमहिँ हमारे मक्का मदीना ।
तुमहीं रोजा रिजिक रोजीना ॥४॥
तुमहिँ कोरान खतम खतमाना ।
तुम तसबी अरु दीन इमाना ॥५॥

---

*दाँत और ज़बान । †नाड़ी । ‡सिर से पैर तक । §रो कर । ‖ओट में ।

मैं आसिक महबूब तू दरसा ।
बेगर* तोहि जहान जहर सा ॥६॥
देहु दिदार दिलासा एही ।
नातर जाव बिनसि बरु देही ॥७॥
कादिर तुमहिँ कदर को जाना ।
मैं हिन्दू किधौं मुसलमाना ॥८॥
धरनीदास खड़े दरवाजा ।
सब के तुमहिँ गरीब निवाजा ॥९॥

॥ ४ ॥

मैं निरगुनियाँ गुन नहिँ जाना ।
एक धनी के हाथ बिकाना ॥१॥
सोइ प्रभु पक्का मैं अति कच्चा ।
मैं झूठा मेरा साहब सच्चा ॥२॥
मैं ओछा मेरा साहब पूरा ।
मैं कायर मेरा साहब सूरा ॥३॥
मैं मूरख मेरा प्रभु ज्ञाता ।
मैं किरपिन मेरा साहब दाता ॥४॥
धरनी मन मानो इक ठाउँ ।
सो प्रभु जीवो मैं मरिजाउँ ॥५॥

॥ ५ ॥

दूरि न भाई खसम खुदाई । है हाजिर पहिचानि न जाई॥१॥
ढूँढ़ो अपना एही वजूदा† । बैठा मालिक महल मजूदा‡ ॥२॥

---

*बग़ैर, बिना । †शरीर । ‡मौजूद ।

जा को साहब देत बफीक* । चारि पियाला करु तहकीक ॥३॥
महरम कोइ मिले जो यार । पल में पहुँचावे दरबार ॥४॥
धरनी बखत-बलंदो† सोइ । जाकी नजरि तमासा होइ ॥५॥

॥ ६ ॥

मेरे प्रभु तुमहिँ अवर नहिँ कोइ ।
बहु बिधि कहत सुनत नर लोइ ॥१॥
तुव बिस्वास दास मन मान ।
जुग जुग भगत-बछल जा की बान ॥२॥
अवरन्ह तेँ मेरो होत अकाज ।
छोड़ि कुल कानि बिसरि जग लाज ॥३॥
धरनी जनम हारि भावे जीति ।
अब मन बच क्रम हृदे प्रतीति ॥४॥

॥ ७ ॥

जब लग परम तत्तु नहिँ जाने ।
तब लग भरम भूत नहिँ भाजे, करम कोँच लपटाने ॥१॥
सहस नाम कहि कहा भयो मन, कोटि कहत न अघाने ।
भूले भरम भागवत पढ़ि के, पूजत फिरत पखाने ॥२॥
का गिरि कंदरा‡ मन्दर माहँ, कंद मूरि खनि खाने ।
कहा जो बरष हजार रह्यो तन, अंत बहुरि पछिताने ॥३॥
दानि कबीसुर सरसुती, रंक होउ भा राने ।
प्रेम प्रतीति अमिय परचे बिनु, मिले न पद निरबाने ॥४॥
मन बच करम सदा निसिबासर, दूजो ज्ञान न ध्याने ।
धरनी जन सतगुरु सिर ऊपर, भक्त-बछल भगवाने ॥५॥

---

*तौफ़ीक़ । †भाग्यवान ‡पहाड़ की गुफा ।

॥ ८ ॥

मन भज ले पुरुष पुराना । जातेँ बहुरि न आवन जाना ॥१॥
सब सृष्टि सकल जा को ध्यावै । गुरु-गम बिरला जन पावै॥२॥
निसि बासर जिन्ह मन लाया । तिन्ह प्रगट परम पद पाया॥३॥
नहिँ मातु पिता परिवारा । नहिँ बंधु सुता सुत दारा ॥४॥
वै तो घट घट रहत समाना । धनि सोई जो ता कहँ जाना॥५॥
चारो जुग संतन भाखी । सो तो बेद कितेबा साखी ॥६॥
प्रगटे जाके पूरन भागा । सो तो हूँगो सोन सोहागा ॥७॥
उन्ह निकट निरंतर बासा । तहँ जगमग जोति प्रकासा॥८॥
धरनी जन दासन दासा । करु बिस्वंभर बिस्वासा ॥९॥

॥ ९ ॥

एक धनी धन मोरा हो ॥टेक॥
काहू के धन सोना रूपा, काहू के हाथी घोरा हो ।
काहू के मनि मानिक मोती, एक धनी धन मोरा हो ॥१॥
राज न हरै जरै न अगिन तेँ, कैसहु पाय न चोरा हो ।
खरचत खात सिरात* कबहिँ नहिँ, घाट बाट नहिँ छोरा हो॥२
नहिँ सँदूक नहिँ भुइँ खनि गाड़ो, नहिँ पट घालि मरोरा हो†।
नैन के ओझल‡ पलकन राखोँ, साँझ दिवस निसि भोरा हो ३
जब धन लै मनि बेचन चाहे, तीनि हाट§ टकटोरा हो ।
कोई बस्तु नाहिँ ओहि जोगे, जो मोलऊँ सो थोरा हो ॥४॥
जा-धन तेँ जन भये धनी बहु, हिंदू तुरुक करोरा हो ।
सो धन धरनी सहजहिँ पायो, केवल सतगुरु के निहोरा हो५

---

*चुकना । †न कपड़े में धर कर गाँठ दी । ‡ओट । §तीन लोक ।

(राग टोड़ी)

जब मेरो यार मिलै दिल जानी। होइ लवलीन करौं मेहमानी १
हृदय कमल बिच आसन सारी। ले सरधा जल चरन खटारी* २
हित कै चंदन चरचि चढ़ायो। प्रीति कै पंखा पवन डोलायो ३
भाव के भोजन परसि जँवायो। जो उबरा सो जूठन पायो ४
धरनी इत उत फिरहि न भोरे†। सन्मुख रहहि दोऊ कर जोरे ५

(राग नट)

॥ १ ॥

करता राम करै सोइ होय।
कल बल छल बुधि ज्ञान सयानप, कोटि करै जो कोय ॥१॥
देई देवा सेवा करिके, भरम भुले नर लोय।
आवत जात मरत औ जनमत, करम काँट अरुझोय ॥२॥
काहे भवन तजि भेष बनायो, ममता मैल न धोय।
मन मवास चपरि‡ नहिँ तोड़ेउ, आस फाँस नहिँ छोय ॥३॥
सतगुरु चरन सरन सच पायो, अपनी देँह बिलोय।
धरनी धरनि फिरत जेहि कारन, घरहिँ मिले प्रभु सोय ॥४॥

॥ २ ॥

प्रभुजी अब जनि मोहिँ बिसारो।
असरन-सरन अधम-जन-तारन, जुग जुग बिरद तिहारो ॥१॥
जहँ जहँ जनम करम बसि पायो, तहँ अरुझे रस खारो।
पाँचहुँ के परपंच भुलानो, धरेउ न ध्यान अधारो ॥२॥

---

*धोया। †भूल से। ‡दबरा, तलैया।

अंध गर्भ दस मास निरंतर, नखसिख सुरति सँवारो ।
मंजा* मुत्र अग्नि मल क्रुम जहँ, सहजै तहँ प्रतिपारो ॥३॥
दीजै दरस दयाल दया करि, गुन ऐगुन न बिचारो ।
धरनी भजि† आयो सरनागति, तजि लज्जा कुल गारो‡॥४॥

॥ ३ ॥

अजहुँ मन सब्द प्रतीति न आई ॥१॥
चंचल चपल चहूँ दिसि डोलै, तजत नाहिँ चतुराई ॥२॥
सब्द तेँ सुक मुनि सारद नारद, गोरख की गरुआई ॥३॥
सब्द प्रतीत कबीर नामदेव, जागत जक्त दोहाई ॥४॥
सदन धना रैदास चतुरभुज, नानक मीराबाई ॥५॥
संत अनंत प्रतीति सब्द की, प्रगट परम गति पाई ॥६॥
धरनी जो जन सब्द-सनेही, मोहिँ बरनी नहिँ जाई ॥७॥

॥ ४ ॥

जौ लौँ मन तत्तुहिँ नहिँ पकरै ।
तौ लौँ कुमति किवार न टूटै, दया, नाहिँ उघरै ॥१॥
काहे के तीरथ ब्रत भटकि भ्रम, थाकि थाकि थहरै ।
मंडप महजिद मुरति सुरति करि, धोखेहिँ ध्यान धरै ॥२॥
काहेके अनत जिवन फल तोरै, का पचि अनल बरै ।
काहेके बल करि जल पर सोवै, भुइँ खनि खँदक परै ॥३॥
दान बिधान पुरान सुनै नित, तौ नहिँ काज सरै ।
धरनी भवजल तत्तु नाव री, चढ़ि चढ़ि भक्त तरै ॥४॥

---

*सज्जा=हड्डी का गूदा या सड़ा पंछा । †भाग कर । ‡गाली ।

(राग गौरी)

॥ १ ॥

सुमिरो हरि नामहिँ बौरे ॥टेक॥
चक्रहुँ चाहि चलै चित चंचल, मूल मता गहि निस्चल कौ रे।
पाँचहुँ तेँ परिचै करु प्रानी, काहेके परत पचीस के झौरे*॥१
जौं लगि निरगुन पंथ न सूझै, काज कहा महि-मंडल दौरे॥२
सब्द अनाहद लखि नहिँ आवै, चारो पन चलि ऐसहिँ गौ रे॥४
ज्यौं तेली को बैल बेचारा, घरहिँ मेँ कोस† पचासक भौरे।५।
दया धरम नहिँ साधु की सेवा, काहेके सो जनमे घर चौरे६
धरनीदास तासु बलिहारी, झूठ तजो जिन्ह साँचहिँ धौ‡ रे ७

॥ २ ॥

रे बन्दे तू काहे के होत दिवाना।
एक अलाह दोस्त है तेरा, अवर तमाम बेगाना ॥१॥
कौल करार बिसारि बावरो, मान मनी मन माना।
आखिर नहिँ दुनियाँ में रहना, बहुरि उहाँईं जाना ॥२॥
जाहिर जीव जहान जहाँ लगि, सब मोँ एक खोदाई।
बहुरि गनीम‡ कहाँ तेँ आया, जा पर छुरी चलाई ॥३॥
दूर नहीं है दिल का मालिक, बिना दरद नहिँ पैहो।
धरनी बाँग बुलंद पुकारै, फिरि पाछे पछितैहो ॥४॥

॥ ३ ॥

अब हरि दासि भई, तातेँ गही चरन चित लाय ॥टेक॥
रही लजाय लोक की लज्जा, बिसरि गई कुल कानी।
उपजी प्रीति रीति अति बाढ़ी, बिनुहीं मोल बिकानी ॥१॥

---

*झमेला। †गहा। ‡शत्रु।

छाजन भोजन की नहिँ संसय, सहजहिँ सहज कमाये।
संग सहेलरि छोड़ि कै अब, नेकु नाहिँ बिलगाये ॥२॥
दुखदाई दरसै नहीं हो, दहु दिसि सकल दयाल।
अपनो प्रभु अपने गृह पायो, छटकि परो जंजाल ॥३॥
अब काहू के द्वार न आवो, नहिँ काहू के जाव।
धरनी तहँ सच पाइयो, अब जहाँ धनी को नाँव ॥४॥

(राग कल्यान)

जा के गुरु चरनन चित लागा।
ता के मन की भरम भुलानी, धंधा धोखा भागा ॥१॥
सो जन सोवत अवचकही मैं, सिंह सरीखे जागा।
धनि* सुत जन धन भवन न भावत, धावत बन बैरागा॥२॥
हरखित हंस दसा चलि आयो, दुरि गयो दुरमत कागा।
पाँचहुँ को परपंच न लागै, कोटि करै जौं दागा† ॥३॥
साँच अमल तहँ झूठ न झाँकै, दया दीनता पागा।
सत्त सुकृत संतोष समानो, ज्यौं सूई मध धागा ॥४॥
लै मन पवन उरध को धावै, उपजु सहज अनुरागा।
धरनी प्रेम मगन जन कोई, सोइ जन सूर सुभागा ॥५॥

(राग केदार)

॥ १ ॥

अजहु न गुरु चरनन चित दैहौ ॥टेक॥
नाना जोनि भटकि भ्रमि आये, अब कब प्रेम तीरथहिँ न्हैहौ॥१
बड़ कुल बिभव भरम जनि भूलो, प्रभु पैहौ जब दास कहैहौ॥२॥

*स्त्री। †दग़ा।

एह संगति दिन दस कि दसा है, कथि कथि पढ़ि पढ़ि
पार न पैहौ ॥ ३ ॥
करम भार सिर तैं नहिं उतरै, खंड खंड महि-मंडल धैहौ* ॥४
बिनु सतगुरु सतलोक न सूझै, जनमि जनमि
मरि मरि पछितैहौ ॥५॥
धरनी ह्वैहौ तबही साँचे, सतगुरु नाम हृदय ठहरैहौ ॥६॥

॥ २ ॥

अजहुँ मिलो मेरे प्रान-पियारे ।
दीनदयाल कृपाल कृपानिधि, करहु छिमा अपराध हमारे॥१
कल न परत अति बिकल सकल तन, नैन सकल जनु†
बहत पनारे ।
माँस पचो अरु रक्त रहित भे, हाड़ दिनहुँ दिन होत उघारे॥२
नासा नैन स्रवन रसना रस, इंद्री स्वाद जुआ जनु हारे ।
दिवस दसो दिसि पंथ निहारति, राति बिहात‡ गनत जस तारे॥३
जो दुख सहत कहत न बनत मुख, अंतरगत के हो जाननहारे ।
धरनी जिव झलमलित दीप ज्यौं, होत अँधार करो उँजियारे॥४

(राग बिहागरा)

॥ १ ॥

जग मैं सोई जीवनि जिया ।
जा के उर अनुराग उपजो, प्रेम प्याला पिया ॥१॥
कमल उलटो भर्म छूटो, अजप जप जपिया ।
जनु अँधारे भवन भीतर, बारि राखो दिया ॥२॥

*दौड़ोगे । †जैसे । ‡बीतती है ।

काम क्रोध समोधियो, जिन्ह घरहि मँ घर किया ।
माया के परिपंच जेते, सकल जानो छिया ॥३॥
बहुत दिन को बहुत अरुझो, सहजहीं सरुझिया ।
दास धरनी तासु बलि बलि, भूँजियो जिन्ह बिया*॥४॥

॥ २ ॥

रमैया राम भजि लेहु हो, जा तेँ जनम मरन मिटि जाय ॥टेक॥
सहर बसै एक चैाहटा हो, एकै हाट परवान ।
ताही हाट के बानिया हो, बनिज न भावत आन ॥१॥
तीनि तरे एक ऊपरे हो, बीच बहै दरियाव ।
कोइ कोइ गुरुगम ऊतरे हो, सुरति सरीखे नाव ॥२॥
तीनि लोक तीनि देवता हो, सो जाने नर लोय ।
चैाथे पद परिचै भई हो, सो जन बिरले कोय ॥३॥
सोइ जोगी सोई पंडित हो, सोइ बैरागी राव ।
जो एहि पदहिँ बिलोइया हो, धरनी धरे ता को पाँव ॥४॥

॥ ३ ॥

पिय बड़ सुन्दर सखि, बनि गैला सहज सनेह ॥टेक॥
जे जे सुन्दरि देखन आवै, ता कर हरि ले ज्ञान ।
तीन भुवन कै रूप तुलै नहिँ, कैसेके करउँ बखान ॥१॥
जे अगुवा[†] अस कइल धरतुई[‡], ताहि नेवछावरि जाँव ।
जे बाम्हन अस लगन बिचारल, तासु चरन लपटाँव ॥२॥
चारिउ ओर जहाँ तहँ चरचा, आन कै नाँव न लेइ ।
ताहि सखी की बलि बलि जैहौं, जे मोरी साइति[§] देइ ॥३॥

---

*बीज । †बिचौलिया । ‡सगाई । §मुहूर्त्त (ब्याह का) ।

झलमल झलमल झलकत देखो, रोम रोम मन मान ।
धरनी हर्षित गुन गन* गावै, जुग जुग है जनि आन ॥४॥

॥ ४ ॥

अवचक आइ गैला पिया कै सनेसवा, ताखन† उठलिउँ जागि रे।
राम राम करि घर से निकसलिउँ, जे जहँ से तहँ त्यागि रे ॥१॥
सत कै सिँघोरा कर पर मोरा, प्रेम पटम्बर पागि रे ।
बाजन लागु चपल चैाघरिया, चित्त चतुरता भागि रे ॥२॥
पूर परी कुरखेतहिँ‡ चढ़लिउँ, जन परिजन से बागि§ रे ।
करम भरम कर चिता सजावल, ब्रह्म अगिन तेहिँ लागि रे॥३॥
धरनी धनि तहँ भक्ति भाँवरी, चित अनुभै अनुरागि रे ।
अबकी गवना बहुरि नहिँ अवना, बोलहु राम सुभागि रे ॥४॥

(राग पंजर)

॥ १ ॥

तुहि अवलंब हमारे हो ।
भावै पगु नाँगे करो, भावै तुरय|| सवारे हो ॥१॥
जनम अनेकन बादि गैा, निजु नाम बिसारे हो ।
अब सरनागत रावरी, जन करत पुकारे हो ॥२॥
भवसागर बेरा परो, जल माँझ मँझारे हो ।
संतत¶ दीनदयाल हो, कर पार निकारे हो ॥३॥
धरनी मन बच कर्मना, तन मन धन वारे हो ।
अपनो बिरद निबाहिये, नहिँ बनत बिचारे हो ॥४॥

---

*अनेक । †तुर्त । ‡कुरुक्षेत्र अर्थात रणभूमि । §अलग होकर । ||घोड़ा । ¶निरंतर ।

॥ २ ॥

प्रभु तो बिनु को रखवारा ॥टेक॥

हौँ अति दीन अधीन अकर्मी, बाउर बैल बेचारा ।
तू दयाल चारो जुग निस्चल, कोटिन्ह अधम उधारा ॥१॥
अबके अजस अवर नहिँ लागै, सरवस तोहिँ बड़ाई ।
कुल मरजाद लोक लज्जा तजि, गह्यो चरन सरनाई ॥२॥
मैँ तन मन धन तो पर वार्‌यो, मूरख जानत ख्याला ।
ब्याउर* बेदन† बाँझ न बूझै, बिनु दागे नहिँ छाला ॥३॥
तुलसी भूषन भेष बनायो, स्रवन सुन्यो मरजादा ।
धरनी चरन सरन सच पायो, छुटिहै बाद बिबादा ॥४॥

॥ ३ ॥

प्रभु तू मेरो प्रान पियारा ॥टेक॥

परिहरि‡ तोहि अवर जो जाचै, तेहि मुख छीयाँ छारा ।
तो पर वारि सकल जग डारौँ, जैा बसि होय हमारा ॥१॥
हिन्दु के राम अल्लाह तुरुक के, बहु बिधि करत बखाना ।
दुहुँ को संगम एक जहाँ, तहवाँ मेरो मन माना ॥२॥
रहत निरंतर अंतरजामी, सब घट सहज समाया ।
जोगी पंडित दानि दसो दिसि, खोजत अंत न पाया ॥३॥
भीतर भवन भयो उँजियारो, धरनी निरखि सोहाया ।
जा निति देस देसंतर धावो, सो घटहीँ लखि पाया ॥४॥

*बच्चे वाली स्त्री । †पीड़ा । ‡छोड़कर ।

॥ ४ ॥

मो सों प्रभु नाहिं दुखित, तुम सों सुखदाई ॥टेक॥
दीनबन्धु बान तेरो, आइ करु सहाई ।
मो सों नहिं दीन और, निरखो नर लोई ॥१॥
पतित-पावन निगम कहत, रहत हो कित गोई* ।
मो सों नहिं पतित और, देखो जग टोई ॥२॥
अधम को उधारन तुम, चारो जुग ओई ।
मो तें अब अधम आहि, कवन धौं बड़ाई ॥३॥
धरनी मन मनिया, एक ताग में परोई ।
आपन करि जानि लेहु, कर्म फंद छोई† ॥४॥

कबित

॥ १ ॥

किया षट कर्म, तन दया नहिं धर्म, तजो नहिं भर्म,
किमि कर्म छूटै ।
दियो बहु दान, करि बिबिध बिधान, मन बढ़ो अभिमान
जम प्रान लूटै ॥
जग्य अरु जोग, तप तीरथ ब्रत नेम करि, बिना प्रभु-प्रेम,
कलि काल कूटै ।
दास धरनी कहै, कौन बिधि निर्बहै, जबै गुरुज्ञान
तब गगन फूटै ॥

---

*गुप्त । †छोड़ा कर, काट कर ।

॥ २ ॥

जीव की दया जेहि जीव ब्यापै नहीं, भूखे न अहार
प्यासे न पानी ।
साधु से संग नहिँ सब्द से रंग नहिँ, बोलि जानै न
मुख मधुर बानी ॥
एक जगदीस को सीस अरपै नहीं, पाँच पच्चीस
बहु बात ठानी ॥
राम को नाम निज धाम बिस्राम नहिँ, धरनी कह
धरनि मोँ धृग सो प्रानी* ॥

॥ ३ ॥

अधो मुख बास दस मास अवकास नहिँ, जठर मेँ
अनल की आँच बारी ।
बालपन बीति गौ तरुनपन तेज भौ, परे बिष स्वाद
धन धाम नारी ॥
बृद्धपन आइ गौ चौँकि चित चेत भौ, बिना जगदीस
जम त्रास भारी ।
बूझि मन देखु तोहिँ सूझि कछु परत नहिँ, धरनी तजि
चलै गो हाथ झारी ॥

॥ ४ ॥

दुर्लभ देँह बिदेह कहा भयो, अंत को है पुहमी सटना† ।
छिति* छार परो मुख भार‡ जरो, तन गार§ परो
प्रभु जा घट ना ॥

*पृथ्वी पर ऐसे जीव को धिक्कार है । †गर्द में मिलना । ‡भाड़ । §मिट्टी, ।

धरनी धरनी* धरु एक धनी पगु, जो कलि को फंद
चहै कटना ।
तजु तीरथ वर्त बिधान सबै, करु नाम निरंजन की रटना ॥

॥ ५ ॥

मौत महा उत्कंठ† चढ़ै, नहिँ सूझत अंध अभागहु रे ।
चित चेतु गँवार बिकार तजो, जब खेत पड़े कित भागहु रे ॥
जिन बुंद बिकार सुधार कियो, तन ज्ञान दियो पगु ता गहु रे ।
धरनी अपने अपने पहरे, उठि जागहु जागहु जागहु रे ॥

॥ ६ ॥

दिन चार को संपति संगति है, इतने लगि कैान मनी करना ।
इक मालिक नाम धरो दिल मैँ, धरनी भवसागर जो तरना ॥
निज हक पहिचानु हकीकत जानु, न छोडु इमान दुनी घर ना ।
पग पीर गहो पर-पीर हरो, जिवना न कछू हक है मरना ॥

॥ ७ ॥

जीवन थोर बचा‡ भौ भोर§, कहा धन जोरि करोर बढ़ाये ।
जीव दया करु साधु की संगति, पैहौ अभय पद दास कहाये ॥
जा सन॥ कर्म छपावत हौ, सो तो देखत है घट मैँ घर छाये ।
बेग भजो¶ धरनी सरनी, ना तो आवत काल कमान चढ़ाये ॥

॥ ८ ॥

आवत जात परवाह सदा, धन जोरि बटोरि धरो न कबाहीँ ।
तू महराज गरीब-निवाज, अकाज सकाज की लाज तुमाहीँ ॥

---

*टेक; धारना । †बेग या जोश के साथ । ‡बचा । §सबेरा । ॥से । ¶भागो ।

जो हिरदे हरि को पद पंकज, सो मत मो मन तें बिसराहीं।
कह धरनी मनसा बच कर्मना, मोहिं अवर अवलंबन नाहीं॥

॥ ९ ॥

ज्ञान को थान लगो धरनी, जन सोवत चौंकि अचानक जागे।
छूटि गयो बिषया बिष बंधन, पूरन प्रेम सुधा रस पागे॥
भावत बाद बिबाद निखाद*, न स्वाद जहाँ लगि सो सब त्यागे।
मूँदि गईं अँखियाँ तब तें, जब तें हिय में कछु हेरन लागे॥

॥ १० ॥

जननी पितु बंधु सुता सुत संपति, मीत महा हित संतत जोई।
आवत संग न संग सिधावत, फाँस मया परि नाहक खोई॥
केवल नाम निरंजन को जपु, चारि पदारथ जेहि तें होई।
बूझि बिचारि कहै धरनी, जग कोइ न काहु के संग सगोई॥

॥ ११ ॥

दियो जिन्ह प्रान कया सुख सम्पति,
बीच मिले तिन्ह नेह न कौ† ।
होतो कहाँ औ कहा कहि आयो
सो क्यों बिसराय करो कछु औरे॥
जोग औ त्याग बैराग गहो,
धरनी धन काज कहा पचि दौरे।
अंतहिं तो तजिहै सब तोहि,
सो तू न तजै अबहीं क्यों न बौरे॥

---

*निषेध। †कर

॥ ककहरा ॥

(१)

प्रथम करता पुरुष को, कर जोरि मस्तक नाउँ ।
ककहरा निरवारि निर्मल, बोलि सबै सुनाउँ ॥१॥
क–कथा परिचै करहु प्रानी, कवन अवसर जात ।
ख–खोजि ले निजु वस्तु अपनी, छोड़ि दे बहु बात ॥२॥
ग–ग्यान गुरु को कान सुनि, धरु ध्यान त्रिकुटी पास ।
घ–घूमते एक चक्र भँवरा, सेस उड़त अकास ॥३॥
ङ–उदै चंद अनंद उर अति, मोति बरसै धार ।
च–चमक बिजुली रेख दहुँ दिसि, रूप को नहिँ पार ॥४॥
छ–छोट मोट न काहु जानौ, सबै एक समान ।
ज–जुक्ति जानै मुक्ति पावै, प्रगट पद निरबान ॥५॥
झ–झूठ झगर पवारि* डारो, झारि झटकि बिछाव ।
ञ–इंद्रियन के स्वाद कारन, आपु जनि जहँडावो ॥६॥
ट–टेक† टंडस‡ छोड़ि दे, करु साध सब्द बिवेक ।
ठ–ठौर सो ठहराइ ले, जहँ बसत साहब एक ॥७॥
ड–डार पात समूह साखा, फिरत पार न पाव ।
ढ–ढोल मारत साध जन, नहिँ बहुरि ऐसो दाव ॥८॥
न–नाम नौका चढ़ो चित दे, बिना बाद बिबाद ।
त–तहाँ लै मन पवन राखो, जहाँ अनहद नाद ॥९॥
थ–थकित होइ हैँ पाँच, अरु पच्चीस रहि हैँ थीर ।
द–दसँ द्वारे झलमलै, मनि मोति मानिक हीर ॥१०॥

---

*फैंको । †ठगाऊ । ‡ढँढ़सी यानी पाखंडियों का संग छोड़ कर शब्द-अभ्यासी बिबेकी साध का संग कर ।

घ–धोख धंधा जगत बंधा, कथैं बहुत उदास ।
न–निबहैगो* तबहिं जब अभि†, अंतरे बिस्वास ॥११॥
प–प्रेम जा घट प्रगट भो, तहँ बसै पुन्न न पाप ।
फ–फेरि मन तहँ उलटि धरु, जहँ उठत अजपा जाप ॥१२॥
ब–बिना मूल के फूल फूल्यो, हिये माँझ मँझार ।
भ–भेदिया कोइ जानिहै, नहिं और जाननहार ॥१३॥
म–मूल मंत्र ओंकार अद्भुत, निराधार अनूप ।
य–यहाँ पहुँचहि कोई जन, जहँ छाँह नाहीं धूप ॥१४॥
र–राम जपु निजु धाम धवला‡, मन हृदै करु बिसराम ।
ल–लोक चार बिचार परिहरु, प्रीति करु तेहिं ठाम ॥१५॥
व–वारि तन मन धन जहाँ लौं, जिव पवन अरु प्रान ।
श–समुझि आपा मेटि अपनो, सकल बुधि बल ज्ञान ॥१६॥
ष–खैर रेंड़ बबूर सेहुँड़, सो न फरिहैं दाख§ ।
स–सर्व सुख कै सुख एकै, दूसरी जनि राख ॥१७॥
ह–होत नर परमातमा तब, आतमा मिटि जात ।
रहै अचल अबोल अस्थिर, कहै अबिचल बात ॥१८॥
क्ष–छुए ताहि पवित्र हूजै, पुजै मन की आस ।
सही करिहै संत जन, जत|| कही धरनीदास ॥१९॥

---

*अनूठा। †घमंड। [illegible]। ‡हृदय। ‡सफ़ेद। §छोहारा। ||यति=जैसा कि।

(२)

क—कायापुर मेँ अलख झूलै, तहाँ करु पैसार*
सुरत द्वादस लाइ कै, तुम वाद करहु हँकार† ॥१॥
ख—खड़्ग गहि गुरु ज्ञान को, तब मारु पाँच पचीस।
उनमुनी घर रहनि करि, तुम जपो जन जगदीस ॥२॥
ग—गगन धुनि मन मगन भो, करु प्रेम तत्त प्रकास।
ज्ञान अंकुस देइ के, गज‡ राखु त्रिकुटी पास ॥३॥
घ—घेरि है मन मोह माया, कहूँ नाहिँ निकार।
संत जन जेहि पंथ कहहीँ, ताहि चेतु गँवार ॥४॥
ङ—अवधपुर§ मेँ जाइ के, तू देखु ब्रह्म सुहाव।
तहँ लोकचार‖ विचार नाहीँ, वेद को नहिँ भाव ॥५॥
च—चारि दिन सुख कारने, नर भुलो सकल सयान।
काम क्रोधहिँ कैद करिके, परसु पद निर्वान ॥६॥
छ—छुटा भो अभि¶ अंतरे, मन गयो सहज अकास।
तहँ सुखमना दह** कमल फूलो, सेत भँवर तेहिँ पास ॥७॥
ज—जनम दुर्लभ जात है, नहिँ जक्त कोउ पतियाय।
बहुरि न ऐसो दाँव पैहौ, लेहु उरध बनाय ॥८॥
झ—झपी है†† जहँ बस्तु झिलमिल, अभय घर उँजियार।
तहाँ अमृत बुंद बरसै, जोगि करत अहार ॥९॥
ञ—आदि इंद्र सुकादि‡‡ खोजहिँ, पार किनहुँ न पाय।
तुम आपु अपनी सीख रहि कै, द्वार दसम समाय ॥१०॥

---

*पैठारी, पहुंच। †अहंकार। ‡हाथी अर्थात मन। §संतोँ का दसवाँ द्वार। ‖लोकाचार। ¶हृदय। **तालाब। ††छिपी है। ‡‡शुकदेव आदिक ऋषि मुनि।

ट--टारि दे निज् भजन सेती, जन्म जन्म बिकार ।
एक भक्ति बिनु मुक्ति नाहीं, कोटि करहु बिचार ॥११॥

ठ--ठाँव सोई सराहिये, जहँ बरसई जल धार ।
इक पिंगल बिच अंतरे, तहँ प्रेम धुनि ओंकार ॥१२॥

ड--डंभ औ षट स्वाद जारो ब्रह्म अग्नि प्रचारु ।
आपु अपनो सीष रहिकैं, द्वादसो संभारु ॥१३॥

ढ--ढरन* कठिन ए यार देखो, नाथ की यह रीति ।
तहँ जाति पाँति बिसाइ नाहीं, भक्तजन सों प्रीति ॥१४॥

न--नाम को सतभाव राखो, उर्ध सों करु नेह ।
जब अभयपुर कहँ परग दीन्हो, छुटो भरम सँदेह ॥१५॥

त--तहाँ पूरन रहनि करु, जहँ सक्ति सीव निवास ।
ब्रह्मादि औ सनकादि खोजहिँ, संत करहिँ निवास॥१६॥

थ--थीर नाहीं जगत देखो, जस सलिल† में नीर ।
जात जनमत मरत पुनि पुनि, करत कृत बेपीर‡ ॥१७॥

द--देँहि में कछु दया राखो, प्रीति करु वहि देस ।
सुरति के घर निरति कथिया, ब्रह्म नटवर§ भेस ॥१८॥

ध--ध्यान धरु निसु बासरे, जहँ उठत अजपा जाप ।
बिना रसना मंत्र ठहरै, छुटै जम को दाप‖ ॥१९॥

न--नाम रसना पाइ रे, नहिँ दूसरो अस स्वाद ।
यह मूढ़ को समझाइ कै, सब तजो बाद बिबाद ॥२०॥

प--प्रेम पवन ले तहाँ राखो, जहाँ जोति अपार ।
तब पाप पुन्न नसाइया, जब प्रगट है अनुसार ।२१॥

---

*मन । †सरित=नदी । ‡बग़ैर गुरू के मनमुख करनी करता है । §बाँका, जमूरा । ‖घमंड ।

फ–फरन लागो प्रेम तरु*, जहँ गगन गूफा माहिँ ।
तहं भानु ससि कै उदै नाहीं, होत धूप न छाँहिँ ॥२२॥
ब–बसतिये निसु वासरे, जहँ ब्रह्म बिस्नु महेस ।
निगम को जहँ गम्म नाहीं, जपहिँ ध्रुव फनि सेस ॥२३॥
भ–भेद पायो भजन को, तब अवर नाहिँ सुहाय ।
जस कृपिन कछु कनक पायो, लियो हृदय जुड़ाय ॥२४॥
म–मोह माया जाल मेँ, नर परो है संसार ।
तुम जोग जुक्ति विचारि करि कै, उतरु भव जल पार॥२५॥
य–यरा मरन† दुख बहुत पायो, लियो सरन तिहार ।
अब नाम नेम निवाहये, हौँ संत तुव बलिहार ॥२६॥
र–राति दीवस तहाँ नाहीं, होत साँझ न प्रात ।
कोटिन महँ कोइ जानिहै, नहिँ अवर बूझै बात ॥२७॥
ल–लोक लाज सौँ भाजि करि कै, मिलो हरि कहँ जाय ।
जस मीन जल के अंतरे, तस रहे संत समाय ॥२८॥
व–व्योम‡ ऊपर नाद अनहद, तहँ उठै झनकार
कोइ प्रेमि बिरहिनि जानिहै, नहिँ अवर जाननहार ॥२९॥
स–स्वंग-मुख एक सर्प ऊहे§, रहे सुन्न समाय ।
जो देखिया सो मगन ह्वै, नहिँ दूसरो पतियाय ॥३०॥
प–खोह‖ मेँ एक पर्वतो, तहँ बनो भिन्न अवास¶ ।
संत जन तेहिँ भवन अटके, सुनत अनहद बास ॥३१॥
श–सकल संसय त्यागि के तुम सेव पुरुष पुरान ।
जिन पाइया वा ब्रह्म को, तिन भयो ऐसो ज्ञान ॥३२॥

---

*पेड़, वृक्ष । †जरा मरन । ‡आकाश के परे । §स्वर्ग को मुँह किये कुंडलिनी पड़ी है । ‖कंदरा या घाटी पहाड़ की । ¶जुदा जुदा मंदिर या दीप बने हैं ।

ह–हरख भा अभि अंतरे, मन मगन वहँ खिचि लाग।
बिना मूल के फूल फूल्यौ, देखि षटपद जाग* ॥३३॥
क्ष–छाया नाहीं अपनि देखो, अवर के कहु मोर।
जब अभयपुर को परग दीन्हो, छुटो हाथी घोर ॥३४॥

चौंतीस आखर† जोग बरनन, काल कर्म बिचार।
धरनिहिं निज प्रभु जानिये, अब राखु सरन मुरार ॥३५॥

(३)

क–करता आदि अंत अबिनासी।
करता अगम अगोचर बासी ॥१॥
करता केवल आपहिं आप।
करता के कोउ माय न बाप ॥२॥
ख–खासा होय सो करतहिं जाना।
खाम‡ खलक धंधा लपटाना ॥३॥
खुसी होत धन आवत हाथे।
खाली जात चले नहिं साथे ॥४॥
ग–गुरु के चरन गहो चित लाई।
गुरु सत मारग देत दिखाई ॥५॥
गह्यो जो दृढ़ करि अधर अधारा।
गयो उतरि सो भवजल पारा ॥६॥
घ–घट घट बसे कतहुँ नहिं सूना।
घाट लखे जेहि पुरबल पूना§ ॥७॥

---

*षटपद भँवरा को कहते हैं यानी भँवरा रूपी मन जागा। †अक्षर। ‡कच्चे यानी झूँठे। §पुन्य।

घट मैं जो आवे बिस्वासा ।
घर मैं बैठे बिलसि बिलासा ॥८॥
उ–उत्तम जनम जगत मैं ता को ।
उरध उलटि चढ़ो मन जा को ॥९॥
उज्जल मनसा हरि ब्रत धारी ।
उन तैं कहो कवन अधिकारी ॥१०॥
च–चंचल चित अस्थिर करि राखो ।
चंचल बचन कबहिं जनि भाखो ॥११॥
चारि दिना जगजीवन आथी* ।
चलत बार कोउ संग न साथी ॥१२॥
छ–छिया बुंद पर छबि लपटाई ।
छिया सोई छबि देखि लोभाई ॥१३॥
छित† महँ करि ले राम सनेही ।
छिन यक माहिँ छुटेगी देही ॥१४॥
ज–जक्त माहिँ जगदीस पियारा ।
जो बिसरावे सो चंडारा ॥१५॥
जिन जिन जगजीवन ब्रत धारी ।
जरा मरन की संसय टारी ॥१६॥
झ–झगरा करै कथै सधुवाई ।
झाँझरि नाव पार कस जाई ॥१७॥
झूठ कहत जेहिं त्रास न आवै ।
झोरि झोरि जम ताहि झुलावै ॥१८॥

---

*है । †पृथ्वी, संसार ।

ञ—इंद्री स्वाद रहे अरुझाई ।
इंसुर भक्ति हृदय बिसराई ॥१९॥
इहै प्रमान करो मन माहीं ।
इह अवसर पैहौ पुनि नाहीं ॥२०॥

ट—टहल करो साधू जन केरी ।
टार बार परिहरि* बहुतेरी ॥२२॥
टंडस† तेँ बाढ़े जंजाला ।
टापा‡ लेइ पुनि छोपै काला ॥२३॥

ठ—ठाकुर एक है सिरजनहारा ।
ठाँव ठाँव दै सबहिँ अहारा ॥२४॥
ठाकुर छोड़ि आन मन लावै ।
ठावहिँ आपन काज नसावै ॥२५॥

ड—डारी धरि मूलहिँ बिसराय ।
डहँकि लोक पाखंडहिँ खाय ॥२६॥
डर नहिँ आवै ला दिन केरा ।
डोलत अंध बकै बहुतेरा ॥२७॥

ढ—ढोलिया§ साधु सदा संसारा ।
ढाल‖ धरो सतसंग उबारा ॥२८॥
ढाल कहाँ होइ रहे बेदानी¶ ।
ढरकि जाइहौ ज्यौँ घट पानी ॥२९॥

न—नाम निरंजन करो उचारा ।
नाम एक संसार उबारा ॥३०॥

---

*छोड़-कर । †बाहरी क्रया यानी दिखावे का काम । ‡जिस से छोप कर मछली मारते हैं । §अपनी ढोल बजाने वाला अर्थात अपनी तारीफ़ करने वाला । ‖जिस से तलवार की वार रोकते हैं । ¶बेदांती ।

नाम नाव चढ़ि उतरहि दासा ।
नाम बिहूने* फिरहिँ उदासा ॥३१॥

त--तारन तरन अवर नहिँ कोई ।
ताहि देखु मूरख नर लोई ॥३२॥
तुलसी पहिरि तमोगुन त्यागे ।
ताके आदि अंत नहिँ खाँगे† ॥३३॥

थ--थापन‡ अथपन§ थापनहारा‖ ।
थीर करै मन गगन मँझारा ॥३४॥
थिर भयो मन छूटेव जंजाला ।
थरथर थहरै ता को काला ॥३५॥

द--दुरलभ तन नर देँही पाय ।
दाव इहै हरि भक्ति दृढ़ाय ॥३६॥
देखा देखी मरत अनारी ।
देखु आपने हिये बिचारी ॥३७॥

ध--धर्म दया कीजे नर प्रानी ।
ध्यान धनी को धरिये जानी ॥३८॥
धन तन चंचल थिर न रहाई ।
"धरनी" गुरु की करु सेवकाई ॥३९॥

न--नहिँ तामस नहिँ तृस्ना होई ।
नर अवतार देव गन सोई ॥४०॥
निरमल पद गावै दिन राती ।
निरमल सोभै कवनिहुँ जाती ॥४१॥

*खाली। †घटी। ‡जिसका स्थापन किया जाता है। §जिसका स्थापना नहीं हो सकता। ‖स्थापन करने वाला यानी सब का करता मन।

प--परसुराम अरु बिरसा माई ।
पुत्र जानि जग हेतु बड़ाई ॥४२॥
प्रगटि धरनि ईसुर करि दाया ।
पूरे भाग भक्ति हरि पाया ॥४३॥
फ--फोकट फंद परे नर भूले ।
फिरि फिरि गर्भ अधोमुख फूले ॥४४॥
फेरै अरध उरध लै लावै ।
फिर नाहीं भवसागर आवै ॥४५॥
ब--बहुत गये तरि यही उपाई ।
बहुत रहे यहि दिसि अरुझाई ॥४६॥
बड़े पुन्न भव मानुष देँही ।
बाद जात बिनु राम सनेही ॥४७॥
भ--भेष बनाय कपट जिय माहीं ।
भवसागर तरिहैँ सो नाहीं ॥४८॥
भाग होय जा के सिर पूरा ।
भक्ति काज बिरले जन सूरा ॥४९॥
म--मन गुड्डी गहि गगन चढ़ावै ।
ममता तजि समता उर छावै ॥५०॥
मधुर दीनता लघुता भाखै ।
मन बच कर्म एक ब्रत राखै ॥५१॥
य--युक्ति बिना कोइ मुक्ति न पावै ।
यौ ब्रह्मंड खंड लगि धावै ॥५२॥

याके* हिय ना भेद समाना ।
यप† तप संयम करि पछिताना ॥५३॥

र—राम नाम सुमिरो रे भाई ।
राम नाम संतन सुखदाई ॥५४॥
राम कहत जम निकट न आवै ।
रिग यजु साम अथर्वन‡ गावै ॥५५॥

ल—लछमी जोरि संग जो लेई ।
लाख उपर दीया जो देई§ ॥ ५६ ॥
लोकचार चाटक‖ दिन चारी ।
लेहु आपनो काज सुधारी ॥ ५७ ॥

व—वा से कहौं सुनो चित लाई ।
वासर¶ गये बहुत पछिताई ॥ ५८ ॥
अवलोकहु** अपने मन माहीं ।
अवर प्रकार अंत सुख नाहीं ॥ ५९ ॥

श—सेत झलाझल झलकै जहाँ ।
सुरति निरति लव लावो तहाँ ॥ ६० ॥
सहजहिं रहो गहो सेवकाई ।
सन्मुख मिलिहै आतमराई ॥ ६१ ॥

ष—खोजत धन नर फिरत बेहाला ।
खबरि न जाने पाछे काला ॥ ६२ ॥
खोटा बहुरि जाय खोटसारा ।
खरा चहूँ दिसि चलन पियारा ॥ ६३ ॥

---

*जाके । †जप । ‡वेदों के नाम । §अगले ज़माने में लाख रुपये के ख़ज़ाने पर अखंड दीपक वालते थे । ‖चेटक=धोखा । ¶अवसर । **देखो ।

स—सार बस्तु ढूँढ़हु रे भाई ।
साध कि संगति रहो समाई ॥ ६४ ॥
सत मारग बिनु मुक्ति न होई ।
साँच सब्द सुनियो सब कोई ॥६५॥
ह—होहु दयाल बिसंभर देवा ।
हम नहिँ जानहिँ पूजा सेवा ॥ ६६ ॥
हमरे नहिँ कछु करम निकोई* ।
हरि किरपा होई से होई ॥ ६७ ॥
छ--छोड़हु फाँसी करम गोसाँई ।
छोरि लेहु जम तेँ बरियाई ॥ ६८ ॥
छोटी मति मैँ निपट अनारी ।
छुटैं जानि इक नाम तुम्हारी ॥ ६९ ॥

करम ककहरा जग लिपटाना ।
संत ककहरा कोइ कोइ जाना ॥ ७० ॥
जा घट भा अनुभव परगासा ।
तिन की बलि बलि धरनीदासा ॥ ७१ ॥

॥ अलिफ़नाम ॥

अलिफ़—आप अन्दर बसै, बे--बतलावै दूर ।
ते--तन मैँ तहक़ीक़ कर, अलिफ़ अजाएब नूर ॥ १ ॥
से--सालिस† होय समुझि ले, जीम--जहान बसीर‡ ।
हे--हयात§ की ख़ाक मैँ, ख़े--आख़िर होत ख़मीर‖ ॥ २ ॥

---

*नेक, शुभ । †पंच; बिचौलिया । ‡बुझाका । §जीवन, ज़िन्दगी । ‖मेला ।

दाल--दिलहि में दोस्त है, ज़ाल--ज़िकर[*] कर पेश।
रे--रहीम[†] के राह चढ़, ज़े--ज़िन्दा दरवेश॥ ३ ॥
सीन--सपेद सुबास गुल, शीन--शिकम[‡] दर माँहि।
साद--सुरत साबूत है, ज़ाद--ज़मीर फ़राहि[§] ॥ ४ ॥
तो--तालिब[||] दीदार होय, ज़ो--ज़ालिम उठ जाग।
ऐन--अक़ीदा[¶] बाँध ले, ग़ैन--ग़ाफ़िली त्याग ॥ ५ ॥
फ़े--फ़ाज़िल अन्दर पढ़े, क़ाफ़--क़ोरान तमाम।
काफ़--करे मति काहिली[**], लाम--लेत निज नाम॥ ६ ॥
मीम--मेरा माशूक़ है, नूँ--नादिर[††] कोइ जान।
वाव--वोही की फ़िकर में, हे--हर दम रह मस्तान ॥ ७ ॥
लाम--लेहु ठहराय के, अलिफ़--अकेला सोय।
हमज़ा--ये मुरशिद बिना, धरनी लखै न कोय ॥ ८ ॥

पहाड़ा

एका एक मिलै गुरु पूरा, मूल मंत्र जो पावै।
सकल संत की बानी बूझै, मन परतीत बढ़ावै ॥१॥
दूआ दुई तजै जो दुबिधा, रजगुन तमगुन त्यागै।
सतगुरु मारग उलटि निरेखै, तब सोवत उठि जागै ॥२॥

---

[*] सुमिरन। [†] दयाल। [‡] पेट। [§] मन की सफ़ाई करो। [||] माँगनेवाला। [¶] प्रतीत। [**] सुस्ती। [††] अनूठा; अचरजी।

तीया तीन त्रिबेनी संगम, सो बिरले जन जाना ।
तृस्ना तामस छोड़ि दे भाई, तब करु वहँ प्रस्थाना ॥३॥
चैाथे चारि चतुर नर सोई, चैाथे पद कहँ लागी ।
हँसि कै परम हिंडोलना झूलै, निरखत भा अनुरागी ॥४॥
पँचयेँ पाँच पचीसहिँ बस करि, साँच हिये ठहरावै ।
इँगला पिँगला सुखमन सोधै, गगन मँडल मठ छावै ॥५॥
छठयेँ छवो चक्र को बेँधे, सुन्न भवन मन लावै ।
बिगसत कमल काया करि परिचै, तब चंदा दरसावै ॥६॥
सतयेँ सात सहज धुनि उपजै, सुनि सुनि आनँद बाढ़ै ।
सहजहिँ दीनदयाल दया करि, बूड़त भवजल काढ़ै ॥७॥
अठयेँ आठ अकासहिँ निरखो, दृष्टि अलोकन होई ।
बाहर भीतर सर्ब-निरंतर, अंतर रहै न कोई ॥८॥
नवैँ नवो दुवारहिँ निरखै, जगमग जगमग जोती ।
दामिनि दमकै अमृत बरसै, निर्झर झरै मनि मोती ॥९॥
दसयेँ दस दहाइ पाइ कै, पढ़ि ले एक पहारा ।
धरनीदास तासु पद बंदै, अहि निसु बारम्बारा ॥१०॥

बारहमासा

॥ दोहा ॥

चैत चलहु मन मानि कै, जहँ बसै प्रान पियार ।
हिलि मिलि पाँच महेलरी, पंच-पाँच* परिवार ॥१॥

॥ छंद ॥

परिवार जोरि बटोरि लीजै गोरि खोरि† न लाइये ।
बहुरि समय सरूप अस ना जानिये कब पाइये ॥२॥

॥ दोहा ॥

बैसाखहिँ बनि ठनि धनी‡, साजहु सहज सिँगार ।
पहिरो प्रेम पटम्बारो, सुनि लो मंत्र हमार ॥३॥

॥ छंद ॥

सुनि लेहु मंत्र हमार सुन्दरि हार पहिरु एकावरी ।
छोड़ि मान गुमान ममता अजहुँ समझहु बावरी ॥४॥

॥ दोहा ॥

जेठ जतन करु कामिनी, जन्म अकारथ जाय ।
जोबन गरब भुलाहु जनि, कछु करि लेहु उपाय ॥५॥

॥ छंद ॥

करि लेहु कछुक उपाय नहिँ दुख पाय फिर पछिताइ है ।
जब गाँठि को गथ§ नाठि|| है तब ढूँढ़ते नहिँ पाइ है ॥६॥

॥ दोहा ॥

अजहुँ असाढ़ समुझि चित, यहि दिस हित नहिँ कोय ।
अद्भुत अरथ दरब सब, सुपन अपन नहिँ होय ॥७॥

---

*पच्चीस प्रकृति । †भरम । ‡धन=स्त्री । §बँधा हुआ । ||गिर जाना ।

॥ छंद ॥

अपन नाहिँ कछु सुपन सब सुख, अंत चलिहै। हारिकै ।
मातु पितु परिवार पुनि तोहिं, डारि हैँ परिजारि कै ॥८॥

॥ दोहा ॥

सावन सकुच करहु जनि, धावन* पठवहु चोख† ।
बहुल दिवस लगि अटकियो, अब जनि लावहु धोख ॥९॥

॥ छंद ॥

जनि धोख लावहु चोख धावहु, जो कहावहु पीव की ।
करत कोटि उपाव चिंता, मेटि है नाहिँ जीव की ॥१०॥

॥ दोहा ॥

भामिनि भइल जोवन तन, भजि लेहु भादौँ मास ।
पल न रहहि निजु पती बिनु, ह्वै है जग उपहाँस ॥११॥

॥ छंद ॥

होइ है उपहाँस जग सैँ, मान मानन जनि करो ।
समुझि नेह सनेह स्वामी, हरखि लै हिरदै धरो ॥१२॥

॥ दोहा ॥

आसुन‡ बिरह बिलासिनी, मिलहु कपट पट खोल ।
नाहिँ तो कंत रिसाइ हैँ, मुख हूँ नाहीँ बोल ॥१३॥

॥ छंद ॥

मुख बोलि नाहिँ कछु आइ है, भरमाइ है घर घर घरे ।
तब कहा कूप खनाइ हो§, जब आगि छप्पर पर परे ॥१४॥

---

*हरकारा । †जल्दी । ‡कुवार । §तब कुवाँ खोद कर क्या करोगे ।

॥ दोहा ॥

कातिक कुसल तबहिँ सखी, जबहिँ भजो पिय जानि ।
बहुरि बिछोह कबहुँ नहीं, ह्वैहै जुग जुग रानि ॥१५॥

॥ छंद ॥

जुग रानि ह्वैहै जानि जिय धरि दानि* कोइ न दूसरो।
हित सारि† खेत बिसारि अपनो, बीज डारत ऊसरो ॥१६॥

॥ दोहा ॥

अगहन उत्तर दिये सखि, हम अबला‡ अवतार ।
जतन करत ना बनत कछु, कठिन कुटिल संसार ॥१७॥

॥ छंद ॥

कुटिल यह संसार, बरु§ जरि जाइ जोबन ऐसहीं ।
निज कंत जो अपनाइ हैँ, चलि आइ हैँ घर वैसहीं ॥१८॥

॥ दोहा ॥

पूस पलटि प्रभु आयऊ, प्रगटेव परम अनंद ।
घर घर सगर‖ नगर सुखी, मिटेव दुसह दुख दुंद ॥१९॥

॥ छंद ॥

दुख दुंद मेटेव चन्द भेँटेव, फंद सबन छुटाइया ।
पुलकि¶ बारम्बार ह्वै, परिवार मंगल गाइया ॥२०॥

॥ दोहा ॥

माघ मुदित मन छिनहिँ छिन, दिन दिन बढ़त सोहाग ।
नैहर भरम भटकि गयो, सासुर संक** न लाग ॥२१॥

॥ छंद ॥

नहिँ लागु सासुर संक हे सखि, रंक जनु राजा भयो ।
निज नाह†† मिलियो बाँह ग्रिवा‡‡ दै, सकल कलमंख दुरि गयो॥२२

---

*दानी, दाता । †अच्छा, उपजाऊ । ‡स्त्री । §चाहे । ‖सब । ¶मगन ।
**शंका, डर । ††पति । ‡‡गर्दन मैं ।

॥ दोहा ॥

फागुन फर्‌यो अमी फल, झर्‌यो सकल दुख पात ।
निसु दिन रहत मगन मन, सो सुख कह्यो न जात ॥२३॥

॥ छंद ॥

कहि जात नहिँ सुख ताहि मूरति, सुरति जहँ ठहराइया ।
सुनि बिमल बारह मास को, गुन दास धरनी गाइया ॥२४॥

बोध लीला ।

प्रथमहिँ बरनौँ एकै करता । आदि अंत मधि भरता हरता॥१
तब बंदौँ सतगुरु के पाँव । परस जो सोवत जीव जगावँ॥२
तब पुनि सकल साधु सिर नावौँ । जा की दया अभय पद पावौँ३
स्रवनन्ह सुनी संत की बानी । तब पुनि बेद पुरान कहानी॥४॥
संसकार सतसंगति पाई । तब यह जग मिथ्या ठहराई ॥५॥
जित देखा इस्थित नहिँ कोई । सो इस्थित जा तेँ सब होई॥६
संसा करि संसार भुलाना । सो सब हृदय कियो अनुमाना॥७
जस सपने सुख संपति पावे । जागे काज कछू नहिँ आवे॥८
मरकट मुट्ठी छोड़ि न देई । बिनु बंधन तन बंधन लेई ॥९॥
नाभि सुगंध नासिका बासा । चरचत* फिरे चहूँ दिस घासा१०
दूजा देखो दरपन माहीँ । छबि जनु एक बहुरि कछु नाहीँ११
नलनी बैठि सुगा जिमि भूला । भरमत अंध अधोमुख झूला१२
जल महँ प्रतिमा देखलावे । खोजत बिनसे हाथ न आवे१३

---

*ढूँढ़ता ।

अपनी दैंह घुमावन बारा* । घूमत कहे सकल संसारा ॥१४
जानत जैवरि† सरप अँधारे । निरखिव होत सो दीपक बारे१५
तृन को मानुष खेत मँझारा । मृग तेहि मद्धु चरे नहिं चारा॥१६
फटिक सिला अरुझै मै मंता‡ । अपनी कुबुधि गँवायो दंता१७
देखत खाल गऊ गरुआनी । हेतु करे अपनो सुत जानी ॥१८
अस्थिर आपु नावरी माहीं । जानत अवर चले सब जाहीं१९
भूँसत स्वान काँचु के ग्रेहा । मन अभिमान बिसारे दैंहा ॥२०
मृग-तृसना जल धोखे धावे । थाकि परे पाछे पछितावे ॥२१॥
मानुष जन्म जुआ में हारे । हरि भक्ती नहिं हृदय बिचारे॥२२
उदय अस्त जहाँ लगि देखा । सत्त आतमा राम बिसेखा॥२३
एकै बीज वृच्छ होए आया । खोजत काहु अंत नहिं पाया२४
देखो निरखि परखि सब कोई । सब फल माहिं बीज एक होई ॥२५॥
पुरइन ज्योँ जल मध्य अकासा । एकै ब्रह्म सकल घट बासा२६
मनि-गन माल मध्य जिमि डोरा । सागर एक अनेक हिलोरा२७
एक भँवर सब फूल मँझारा । एक दीप सब घर उँजियारा॥२८
तत्तु निरंजन सब के संगा । पसु पंछी नर कीट पतंगा ॥२९॥
देखो आपन कया बिलोई । बाद बिबाद करे नति कोई॥३०॥
काम क्रोध मद लोभ नेवारे । समता गहि ममता को मारे३१
आन के दोस कबहुँ नहिं धरई । जानत जीव के घात न करई३२
निरपच्छो साँचहि अस्थावे§ । निरदावा धन मृथा न खावे३३
संतत धर्म अनासृत करई । सो प्रानी भवसागर तरई ॥३४॥
दुख सुख एकै भाव जनावे । अभिअंतर बिस्वास बढ़ावे॥३५

*बेर; समय । †रस्सी । ‡मदांध हाथी । §ठराहवे; गहे ।

अस्तुति निंदा दुवो समाना । सुरनर मुनि गन ताहि बखाना३६
तेहि समान तुले नहिँ कोई । जीवन-मुक्त कहावे सोई ॥३७॥
मन परमोध जाहि मन भावे। त्रिविधि पाप तन ताप नसावे३८
चित्रगुप्त धरमाधी राजा । काल दूत जम आरति साजा ३९
अपनो आपा आपु मिटाई । धरनीदास तासु बलि जाई ४०
ऐसी दसा बिराजी जा की । धरनी तहँ न रही कछु बाकी४१

॥ साखी ॥

॥ गुरु ॥

धरनी जहँ लगि देखिये, तहँ लौँ सबै भिखारि ।
दाता केवल सतगुरू, देत न मानै हारि ॥१॥
धरनी यह मन मृग भयो, गुरू भये ज्योँ ब्याध ।
बान सब्द हिये चुभि गयो, दरसन पाये साध ॥२॥
धरनि फिरहिँ देसंतरो, धरि धरि के बहु भेस ।
कोई कोई देखिहै, अंतर गुरु उपदेस ॥३॥
धूवाँ के धवरेहरा* औ धूरी को धाम ।
ऐसे जीवन जगत मेँ, बिनु गुरु बिनु हरि नाम ॥४॥
धरनी सब दिन सुदिन है, कबहुँ कुदिन है नाहिँ ।
लाभ चहूँ दिसि चौगुनो, (जो) गुरु सुमिरन हिये माहिँ ॥५॥

॥ चेतावनी ॥

धरनी धरि रहु हरि ब्रतहिँ, परिहरि सबही मोह ।
धन सुत बंधु बिभव† जत, होवे अंत बिछोह ॥६॥

---

*ऊँचा घर । †ऐश्वर्य्य ।

धरनी धोख न लाइये, कबहीं अपनी ओर ।
प्रभु सोँ प्रीति निबाहिये, जीवन है जग थोर ॥७॥
गोरिया गरब करहु जनि, अपने गोरे गात ।
काल्हि परोँ चलि जांइ है, जैसे पियरे पात ॥८॥
धरनी चहुँ दिसि चरचिया*, करि करि बहुत पुकार ।
नाहीँ हम हैँ काहु के, नाहीं कोउ हमार ॥९॥

॥ बिरह और प्रेम ॥

धरनी धन वो बिरहनी, धारै नाहीं धीर ।
बिहवल बिकल सदा चित, दुर्बल दुखित सरीर ॥१०॥
धरनी परबत पर पिया, चढ़ते बहुत डेराँव ।
कबहुँक पाँव जु डिगमिगै, पावौँ कतहुँ न ठाँव ॥११॥
धरनी धरकत है हिया, करकत आहि करेज ।
ढरकत लोचन भरि भरी, पीया नाहिन सेज ॥१२॥
धरनी धवल† धरेहरहिँ, चढ़ि चढ़ि चहुँ दिसि हेर ।
आवत पिय नहिँ दीखतो, भइली बहुत अबेर ॥१३॥
धरनी सो दिन धन्न है, मिलब जबै हम नाह‡ ।
संग पौढ़ि सुख बिलसिहौँ, सिर तर धरि के बाँह ॥१४॥
धरनी धन की भूल हो, कछू बरनि नहिँ जाय ।
सनमुख रहती रैन दिन, मिलत नहीं पिय धाय ॥१५॥
धरनी पलक परै नहीं, पिय की झलक सोहाय ।
पुनि पुनि पीवत परम रस, तबहूँ प्यास न जाय ॥१६॥
धरनी धन तन जिवन यह, चाहे रहै कि जाय ।
हरि के चरनहिँ हृदय धरि, अब तो हेत बढ़ाय ॥१७॥

---

*ढूँढ़ा । †सफ़ेद । ‡पति ।

धरनी सो धन धन्य हो, धन धन कुल उँजियार ।
जा कर बाँह धइल पिया, आपन हाथ पसार ॥१८॥
धरनी पिय जिन पाअल, मेटि गइल सब दुंद ।
अरध उरध सुर गावल, हिरदय होय अनंद ॥१९॥
धरनी खेती भक्ति की, उपजे होत निहाल ।
खर्चे खाय निबरै नहिँ, परै न दुःख दुकाल ॥ २० ॥
धरनी मन मिलबो कहा, जो तनिक माहिँ बिलगाय ।
मन को मिलन सराहिये, जो एक मैं इक होइ जाय ॥ २१ ॥

॥ तत्व वस्तु ॥

तेरे मन मैँ तत्वहै, तैा अनते कित धाव ।
धरनी गुरु उपदेस लै, घरहिँ माहिँ घर छाव ॥ २२ ॥
अर्ध कँवल के ऊपरे, तहाँ दुवादस एक ।
धरनी भैाजल बूड़ते, गुरु गम पकरी टेक ॥ २३ ॥
दिया दिया घर भीतरे*, बाती तेल न आगि ।
धरनी मन बच कर्मना, ता सोँ रहना लागि ॥ २४ ॥
बिनु पगु निरत करो तहाँ, बिनु कर दैदै तारि ।
बिनु नैनन छबि देखना, बिनु सरवन झनकारि ॥ २५ ॥
देँह देवखरा भीतरे, मूरति जोलि अनूप ।
मोती अच्छत चढ़तु है, धरनी सहज सरूप ॥ २६ ॥
धरनी अरध उरध चढ़ि, उदयो जोति सरूप ।
देखु मनोहर मूरती, अतिहीँ रूप अनूप ॥२७॥
बहुत दुवारे सेवना, बहुत भावना कीन्ह ।
धरनी मन संसय मिटी, तत्व परो जब चीन्ह ॥ २८ ॥

---

*अंतर मैँ दीपक धरा है ।

धरनी चहुँ दिसि दौरियो, जहँ लौं मन की दौर ।
एक आतमा तत्व बिनु, अन्त न पाई ठौर ॥ २९ ॥
तब लगि प्रगट पुकारिया, जब लगि निबरी नाहिँ ।
धरनी जब निबरी परी, मन की मनहीँ माहिँ ॥ ३० ॥
धरनी हृदय पलंगरी, प्रीतम पौढ़े आय ।
समा सुनी जो स्रवन तेँ, कहे कवन पतियाय ॥ ३१ ॥
धरनी तन में तख्त है, ता ऊपर सुलतान ।
लेत मोजरा सबहिँ को, जहँ लौं जीव जहान ॥ ३२ ॥
बिनु अच्छर के अच्छरा, बिनु लिखनी का लेख ।
बिनु जिभ्या का बाँचना, धरनी लखा अलेख ॥ ३३ ॥
लिखि लिखि सिखि सिखि का भयो, पढ़ि गुनि गाय बजाय ।
धरनी मूरति मोहिनी, जौं लगि हिये न समाय ॥ ३४ ॥
अच्छर सब घट उच्चरै, जेते जिव संसार ।
लागि निरच्छर जो रहे, ता अच्छर टकसार ॥ ३५ ॥

॥ ध्यान ॥

धरनी ध्यान तहाँ धरो, उलटि पसारो दृष्टि ।
सहज सुभावहिँ होत जहँ, पुहुप माल की बृष्टि ॥ ३६ ॥
धरनी ध्यान तहाँ धरो, जहवाँ खुलहि किंवार ।
निरखि निरखि परखत रहो, पल पल बारम्बार ॥३७॥
धरनी ध्यान तहाँ धरो, प्रगट जोति फहराहि ।
मनि मानिक मोती झरै, चुगि चुगि हंस अघाहि ॥ ३८ ॥
धरनी ध्यान तहाँ धरो, त्रिकुटी कुटी मँझार ।
घर के बाहर अधर है, सनमुख सिरजनहार ॥ ३९ ॥

धरनी अधरे ध्यान धरु, निसिबासर लै लाइ ।
कर्म कीँच मगु बीच है, (सो) कंचन गच ह्वै जाइ ॥ ४० ॥

॥ आरती ॥

धरनी प्रभु की आरती, करिये बारंबार ।
ऊठत बैठत सोवते, अह निसि साँझ सकार ॥ ४१ ॥
साँझ समय कर जोरि कै, उभै* घरी जस गाव ।
धरनी दास सुचित्त† ह्वै, गुरु भक्तन सिरनाव ॥ ४२ ॥

॥ बिनती ॥

धरनी जन की बीनती, करु करुनामय कान ।
दीजै दरसन आपनो, माँगों कछु नहिं आन ॥ ४३ ॥
धरनी बिलखि‡ बिनती करै, सुनिये प्रभू हमार ।
सब अपराध छिमा करो, मैं हौं सरन तिहार ॥४४॥
धरनी सरनी रावरी, राम गरीब-नेवाज ।
कवन करैगा दूसरो, मोहिं गरीब के काज ॥ ४५ ॥
काहू के बहु बिभव भइ, काहू बहु परिवार ।
धरनी कहत हमहिं बल, ए हो राम तुम्हार ॥४६॥
बार बार संसार में, धरनी लागत चोट ।
अब पकरो परतच्छ ह्वै, राम नाम की ओट ॥ ४७ ॥
तिनुका दाँत के अंतरे, कर जोरे भुइँ सीस ।
धरनी जन बिनती करै, जानु§ परो जगदीस ॥ ४८ ॥

*दो । †एकचित । ‡रोकर । §जाँघ, चरन ।

धरनी नहिँ बैराग बल, नाहिँ जोग सन्यास ॥
मनसा बाचा कर्मना, बिस्वंभर बिस्वास ॥ ४९ ॥
बिनती लीजे मानि करि, जानि दास को दास ।
धरनी सरनी राखिये, अवर न दूसर आस ॥ ५० ॥

॥ ब्राह्मण ॥

धरनी भरमी बाम्हने, बसहिँ भरम के देस ।
करम चढ़ावहिँ आपु सिर, अवर जे ले उपदेस ॥५१॥
करनी पार उतारिहै, धरनी कियो पुकार ।
साकित बाम्हन नहिँ भला, भक्ता भला चमार ॥५२॥
मास अहारी बाम्हना, सो पापी बहि जाउ ।
धरनी सूद्र बइस्नवा, ताहि चरन सिर नाउ ॥५३॥

॥ भेष ॥

कुल तजि भेष बनाइया, हिये न आयो साँच ।
धरनी प्रभु रीझै नहीँ, देखत ऐसो नाच ॥५४॥
भेष लियो दाया नहीँ, ध्यान धतूरा भाँग ।
धरनी प्रभु काँचा नहीं, जो भूलत ऐसे स्वाँग ॥५५॥

॥ नारी ॥

नारी बटमारो करै, चारि चैाहटे माहिँ ।
जो वोहि मारग होइ चले, धरनी निबहे नाहिँ ॥५६॥
दामिनी ऐसी कामिनी, फाँसी ऐसो दाम ।
धरनी दुइ तेँ बाचिये, कृपा करै जो राम ॥५७॥
धरनी ब्याही छोड़िये, जो हरिजन देखि लजाय ।
बेस्या संग बिराजिये, जो भक्ति अंग ठहराय ॥५८॥

॥ मिश्रित ॥

धरनी काहि असीसिए, औ दीजै काहि सराप ।
दूजा कतहुँ न देखिये, सब घट आपै आप ॥५९॥
धरनी कथनी लोक की, ज्यौं गीदर को ज्ञान ।
आगम भाखै और के, आपु परे मुख स्वान ॥६०॥
धरनी सो पंडित नहीं, जो पढ़ि गुन कथै बनाय ।
पंडित ताहि सराहिये, जो पढ़ा बिसरि सब जाय ॥६१॥
धरनी कागद फारिकै, कलम पबारै* दूर ।
कया कचहरी पैठिकै, बैठा रहै हजूर ॥६२॥
धरनी कोउ निंदा करै, तू अस्तुति करु ताहि ।
तुरत तमासा देखिये, इहै साधु मत आहि ॥६३॥
धरनी जिव जनि मारियो, माँसहिँ नाहीं खाहु ।
नंगे पाँव बबूर बन, होइ नाहिँ निरबाहु ॥६४॥
माँस अहारी जीयरा, सो पुनि कथै गियान ।
नाँगी होय घूँघट करै, धरनी देखि लजान ॥६५॥
धरनी यह मन जम्बुका,[†] बहुत कुभोजन खात ।
साधु संग मृग होइ रहु, सब्द सुगंध बसात ॥६६॥
धरनी बाहर धुंधरो, भीतर ऊगो चंद ।
भयो भले को अति भलो, है मंदे को मंद ॥६७॥
बिष लागे दुनिया मरै, अमृत लागे साध ।
धरनी ऐसो जानिहै, जाको मता अगाध ॥६८॥

॥ शब्द ॥

धरनी सब्द प्रतीत बिनु, कैसहु कारज नाहिँ ।
सब्द सिढ़ी बिनु को चढ़ै, गगन झरोखा माहिँ ॥६९॥

---

*डाले । [†]स्यार ।

सब्द सब्द सब कोइ करै, धरनी कियो बिचार ।
जो लागे निज सब्द को, ता को मता अपार ॥६०॥
सब्द सकल घट ऊचरे, धरनी बहुत प्रकार ।
जो जाने निज सब्द को, तासु सब्द टकसार ॥७१॥
धरनी धरम अरु करम कै, कलि में कछू न काम ।
मनसा बाचा करमना, भजिये केवल नाम ॥७३॥
परमारथ को पंथ चहि, करते करम किसान ।
ज्यौं घर में घोड़ा अछत, गदहा करै पलान ॥ ७४ ॥
धरनी आपन मरम हो, कहिये नाहीं काहि ।
जाननहार सो जानिहै, जैसो जो कछु आहि ॥ ७५ ॥

पाठक महाशयों की सेवा में प्रार्थना है कि इस पुस्तक-माला के जो दोष उन की दृष्टि में आवैं उन्हें हमको कृपा करके लिख भेजैं जिस में वह दूसरे छापे में दूर कर दिये जावैं और जो दुर्लभ ग्रंथ संतबानी के उन को मिलैं उन्हें भेज कर इस परोपकार के काम में सहायता करैं।

यद्यपि ऊपर लिखे हुए कारनों से इन पुस्तकों के छापने में बहुत ख़र्च होता है तो भी सर्व साधारन के उपकार हेतु दाम आध आना फ़ी आठ पृष्ठ से अधिक किसी का नहीं रक्खा गया है। जो लोग मअसक्रैबर अर्थात पक्के गाहक होकर कुछ पेशगी जमा कर देंगे जिस की तादाद दो रुपये से कम न हो उन्हें एक चौथाई कम दाम पर जो पुस्तकैं आगे छपैंगी विना माँगे भेज दी जायँगी यानी रुपये में चार आना छोड़ दिया जायगा परंतु डाक महसूल उन के ज़िम्मे होगा और पेशगी दाम न देने की हालत में वी० पी० कमिशन भी उन्हें देना पड़ेगा। जो पुस्तकैं अब तक छप गई हैं (जिन के नाम आगे लिखे हैं) सब एक साथ लेने से भी पक्के गाहकों के लिये दाम में एक चौथाई की कमी कर दी जायगी पर डाक महसूल और वी० पी० कमिशन लिया जायगा।

प्रोप्रैटर, बेलवेडियर छापाख़ाना,

अपरैल, १९११ ई०

इलाहाबाद।

संतबानी पुस्तक-माला

तुलसी साहब (हाथरस वाले) की शब्दावली और जीवन-चरित्र ...	२)
,, ,, ,, रत्न सागर मय जीवन-चरित्र ...	१।=)
ग़रीबदास जी की बानी और जीवन-चरित्र	२॥=)
कबीर साहब की शब्दावली और जीवन-चरित्र, भाग १ दूसरा एडिशन	॥)
,, ,, शब्दावली भाग २	।≈)
,, ,, ज्ञान-गुदड़ी व रेख़्ते	≡।)
,, ,, अखरावती	=)
पलटू साहब की शब्दावली (कुंडलिया इत्यादि) और जीवन-चरित्र, भाग १	।)
,, ,, भाग २	।-)॥
धरनदासजी की बानी और जीवन-चरित्र, भाग १ ...	॥)॥
,, ,, ,, ,, भाग २ ...	।≡)॥
रैदासजी की बानी और जीवन-चरित्र	।-)॥
जगजीवन साहब की बानी और जीवन-चरित्र, भाग १ ...	॥-)
दरिया साहब (बिहार वाले) का दरियासागर और जीवन-चरित्र	।-)
दरिया साहब (मारवाड़ वाले) की बानी और जीवन-चरित्र ...	।)॥
भीखा साहब की शब्दावली और जीवन-चरित्र	।≡)
गुलाल साहब (भीखा साहब के गुरु) की बानी और जीवन-चरित्र	॥-)॥
मीरा बाई की शब्दावली और जीवन-चरित्र ...	
सहजो बाई की बानी और जीवन-चरित्र	
दया बाई की बानी और जीवन-चरित्र ...	=)॥
गुसाँई तुलसीदासजी की बारहमासी	)॥
यारी साहब की रत्नावली मय जीवन-चरित्र	-)॥
बुल्ला साहब का शब्दसार और जीवन-चरित्र	=)॥
केशवदासजी की अमीघूंट मय जीवन-चरित्र	-)
धरनीदासजी की बानी और जीवन-चरित्र	।)
अहिल्याबाई का जीवन-चरित्र अँग्रेज़ी पद्य में	=)

मूल्य में डाक महसूल व वाल्यू पेअबल कमिशन शामिल नहीं है।

मनेजर, बेलवेडियर प्रेस, इलाहाबाद।